

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ

साप्ताहिक

बदर
कादिय


Weekly Badar
Qadian
 HINDI

अल्लाह तआला का आदेश

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ بَيْنَ
الْمَرْءِ وَقَلْبِهِ وَأَنَّهُ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٥﴾



(سورة الانفال آيت: 25)

अनुवाद : ऐ लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह और रसूल की आवाज़ पर लम्बैक कहा करो, जब वह तुम्हें बुलाए, ताकि वह तुम्हें ज़िंदा करे और जान लो कि अल्लाह इंसान और उसके दिल के बीच आड़ बन जाता है और यह भी (जान लो) कि तुम उसी की ओर इकट्ठे किए जाओगे ।

संपादक : शेख मुजाहिद अहमद | उप संपादक : सय्यद मोहियुद्दीन फ़रीद

वर्ष- 11 | अंक -41

26 रबीउल सानी 1448 हिज्री कमरी, 08 ईखा 1405 हिज्री शम्सी, 08 अक्टूबर 2026 ई.

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आवाज़ सुनना ही असली ज़िंदगी है।

عَنْ أَبِي سَعِيدٍ فِي الْمَعْلُومِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدِمَ عَلَى حَقِيٍّ صَلَّيْتُ ثُمَّ أَتَيْتُهُ فَقَالَ: "مَا مَنَعَكَ أَنْ تَأْتِيَ أَلَمْ يَقُلِ اللَّهُ بِأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِبُوا لِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ (سورة الأنفال آية ٣٠)؟" ثُمَّ قَالَ: "أَخْبَرْتُكَ أَكْثَرَ سُورَةٍ فِي الْقُرْآنِ قَبْلَ أَنْ تُخْرَجَ". فَلَمَّا هَبَّ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِيَخْرُجَ قَدْ كَثُرَتْ لَهُ مَعَاضِدٌ خَلَّتْ عَنْهُ شُعْبَةٌ عَنْ حَسْبِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ سَمِعَ خَفَصًا نَوَعَ أَبَا سَعِيدٍ جُلًّا مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِهَذَا، وَقَالَ: «هِيَ» أَحْسَنُ مَا رُبِّ الْعَالَمِينَ (الفاتحة: ١) السَّنَةُ الثَّمَانِيَّةُ. [مصحح البخاري / كتاب تفسير القرآن / حديث: ٣٧٤]

हज़रत अबू सईद बिन मुअल्ला रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया कि मैं नमाज़ पढ़ रहा था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे पुकारा। मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में नहीं पहुँच सका, बल्कि नमाज़ से फ़ारिग होने के बाद हाज़िर हुआ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि आने में देर क्यों हुई? क्या अल्लाह तआला ने तुम्हें यह हुक्म नहीं दिया है: **يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ**।

कि “ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल की आवाज़ पर लब्बैक कहो, जबकि वह (अर्थात् रसूल) तुम्हें बुलाएँ।”

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मस्जिद से निकलने से पहले मैं तुम्हें कुरआन की सबसे महान सूरह सिखाऊँगा। थोड़ी देर बाद जब आप बाहर तशरीफ ले जाने लगे तो मैंने आपको याद दिलाया। और मुआज़ बिन मुआज़ अंबरी ने इस हदीस को इस तरह रिवायत किया कि हमसे शोबा ने बयान किया, उनसे खुबैब ने, उन्होंने हफ्स से सुना और उन्होंने अबू सईद बिन मुअल्ला रज़ियल्लाहु अन्हु से सुना, जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबी थे। उन्होंने बयान किया कि वह (सूरह फ़ातिहा) (الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ) है, जिसमें सात आयतें हैं, जो हर नमाज़ में बार-बार पढ़ी जाती हैं।

व्याख्या: «يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ» : इस आयत में **لَكُمْ** के अर्थ हैं: “उस बात की ओर जो तुम्हारी सुधार करे।” इह्या का अर्थ सुधार है। अल्लाह और रसूल की बात मानो, क्योंकि वे उन बातों की राहनुमाई करते हैं जिनसे तुम्हारा सुधार होगा। तफ़सीर सूरह आले इमरान, बाब 12 में भी यह विषय बयान हुआ है।

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम इमाम मेहदी - मसीह मौज़द का उपदेश

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान और प्रभावशाली चमत्कार

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि:

“इसी तरह दूसरा मौजिज़ा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का चाँद का दो टुकड़े होना है, जो इसी इलाही ताक़त से ज़ाहिर हुआ था। इसके साथ कोई दुआ शामिल नहीं थी, क्योंकि वह केवल उंगली के इशारे से, जो इलाही ताक़त से भरी हुई थी, घटित हो गया था। और इस प्रकार के और भी बहुत से मौजिज़े हैं जो केवल व्यक्तिगत अधिकार के रूप में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दिखाए, जिनके साथ कोई दुआ नहीं थी।

कई बार थोड़े से पानी को, जो केवल एक प्याले में था, अपनी उंगलियाँ उस पानी के अंदर डालने से इतना बढ़ा दिया कि पूरे लश्कर और ऊंटों और घोड़ों ने वह पानी पिया और फिर भी वह पानी उसी मात्रा में मौजूद था। और कई बार दो-चार रोटियों पर हाथ रखने से हजारों भूखे-प्यासों को उनसे पेट भर दिया। और कभी-कभी थोड़े से दूध को अपने होंठों से बरकत देकर एक पूरी जमाअत का पेट उससे भर दिया। और कभी-कभी खारे पानी वाले कुएँ में अपने मुँह का लार डालकर उसे बहुत मीठा कर दिया। और कभी-कभी बहुत घायल लोगों पर अपना हाथ रखकर उन्हें ठीक कर दिया। और कभी-कभी उन आँखों को, जिनकी पुतलियाँ लड़ाई के किसी सदमे से बाहर निकल गई थीं, अपने हाथ की बरकत से फिर ठीक कर दिया।

इसी तरह और भी बहुत से काम अपने व्यक्तिगत अधिकार से किए, जिनके साथ एक छिपी हुई इलाही ताकत मिली हुई थी।”

(आईना-ए-कमालात-ए-इस्लाम, रुहानी खज़ाइन, جلد 5, صفحہ 65-66)



मृतकों को जीवित करने से मतलब ऐसे बीमारों को, जो मुर्दों की तरह हों, उन्हें ज़िंदा करना है

हजरत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु आयत **كَذَلِكَ يُخَيِّرُ اللَّهُ الْبَوْتَى** की तफ़सीर में इह्या-ए-मौता की व्याख्या करते हुए फ़रमाते हैं:

میں کھانا-پانی-موتی سے مطالبہ: كَذٰلِكَ يُحْيِي اللّٰهُ الْمَوْتٰى

كَذَلِكَ يُحْيِي اللَّهُ الْمَوْتَىٰ के दो अर्थ हैं—पहला यह कि इस तरह अल्लाह तआला मुर्दों को ज़िंदा करता है, अर्थात् वास्तविक मुर्दों को ज़िंदा करके इस दुनिया में वापस लाता है। ये अर्थ इस जगह नहीं लिए जा सकते, क्योंकि कुरआन शरीफ़ की दूसरी आयतें इन अर्थों के विरुद्ध हैं और उनसे साबित होता है कि वास्तविक मुर्दें इस दुनिया से वापस नहीं आ सकती।

एक अर्थ इस आयत के यह भी हो सकते हैं कि जो मुर्दों की तरह हों, उन्हें ज़िंदा कर देना। ये अर्थ आम बोलचाल के अनुसार हैं। कभी-कभी एक चीज़ दूसरी चीज़ से इतनी मिलती-जुलती हो जाती है कि उसका नाम उसे मिल जाता है। चुनाँचे आम बोलचाल में जब किसी व्यक्ति को कोई सख्त चोट लगती है तो वह अपने दर्द और तकलीफ़ का इज़हार करते हुए कहता है, “हाय! मैं मर गया।” इसका मतलब यह होता है कि मैं मुर्दों की तरह हो गया।

इसलिए आयत के ये अर्थ भी हो सकते हैं कि जो मुर्दों की तरह हों, अल्लाह तआला उन्हें जिंदा कर देता है, अर्थात् जिनके बचने की कोई उम्मीद बाकी नहीं रहती और दुनियावी ज्ञान उनकी मौत का फ़ैसला सुना देते हैं, खुदा तआला उन्हें अपने फ़ज़ल से बचा लेता है।

(तफ़्सीर-ए-कबीर, जिल्द 2, पृष्ठ 188, ऑनलाइन संस्करण)

अखबार-ए-अहमदिया

रूहानी खलीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब खलीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनसिहिल अज़ीज़ सकुशल हैं। अलहुम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हज़र को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

हज़रत खलीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ का जलसा सालाना ब्रिटेन 2026 के दूसरे दिन दोपहर के सत्र से संबोधन का सारांश

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूरह फ़ातिहा की तिलावत के बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

इस समय मैं वर्ष के दौरान अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत अहमदिया पर होने वाले फ़ज़लों का संक्षिप्त विवरण पेश करूंगा।

नई जमाअतों की स्थापना

इस वर्ष दुनिया भर में पाकिस्तान के अलावा जो नई जमाअतें स्थापित हुई हैं, उनकी संख्या 398 है। इन नई जमाअतों के अलावा 811 नए स्थानों पर पहली बार अहमदियत का पौधा लगा है। बेनिन में इस वर्ष 86 नई जमाअतें स्थापित हुई हैं। दूसरे नंबर पर कांगो ब्राज़ाविल, फिर लाइबेरिया और इसी तरह बाकी देश हैं।

नई मस्जिदों की स्थापना

इसी तरह वर्ष के दौरान जो मस्जिदें बनाई गई हैं या जमाअत को ये मस्जिदें मिली हैं, उनकी कुल संख्या 172 है। इनमें से 133 नई मस्जिदें बनाई गई हैं और 39 बनी-बनाई मस्जिदें जमाअत को मिली हैं।

मिशन हाउसों और तब्लीगी केंद्रों में वृद्धि

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से वर्ष के दौरान 41 देशों में 127 मिशन हाउसों की वृद्धि हुई है। इसमें पहले नंबर पर केन्या है, फिर घाना और इंडोनेशिया दूसरे नंबर पर हैं। तीसरे नंबर पर नाइजर है। वक्कर-ए-अमल के ज़रिए काम करने के कारण इस वर्ष जमाअत को 3 मिलियन अमेरिकी डॉलर की वित्तीय बचत हुई है।

वकालत-ए-इशाअत व तबाअत

वकालत-ए-इशाअत की रिपोर्ट के अनुसार इस वर्ष 37 भाषाओं में 353 अलग-अलग किताबें, पैम्फलेट, फ़ोल्डर आदि 16 लाख 89 हज़ार से अधिक की संख्या में छपे हैं।

कुरआन करीम की तफ़ासीर में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तफ़सीर, जो पहले उर्दू में 8 जिल्दों में प्रकाशित हुई थी, उसका पूरा अरबी अनुवाद पहली बार प्रकाशित किया गया है। इसी तरह अंग्रेज़ी तफ़सीर Five Volume Commentary भी प्रकाशित हुई है। इसकी पहली जिल्द का अरबी अनुवाद दोबारा प्रकाशित हुआ है।

अहादीस में हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबिदीन वलीउल्लाह शाह साहब की शरह सहीह बुख़ारी की पहली जिल्द का अंग्रेज़ी अनुवाद दोबारा प्रकाशित हुआ है। दूसरी जिल्द का अंग्रेज़ी अनुवाद पहली बार प्रकाशित हुआ है। यह ज्ञान का बहुत बड़ा खज़ाना है। दोस्तों को इससे फ़ायदा उठाना चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों के अनुवादों में 45 किताबों के 18 भाषाओं में अनुवाद हुए हैं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की 11 किताबें 6 भाषाओं में प्रकाशित हुई हैं। हज़रत खलीफ़तुल मसीह तृतीय रहमतुल्लाहि अलैह की किताब “तामीर बैतुल्लाह के 23 अज़ीमुशान मक़ासिद” का अरबी अनुवाद पहली बार प्रकाशित हुआ है। हज़रत खलीफ़तुल मसीह चतुर्थ रहमतुल्लाहि अलैह की किताब Christianity—A Journey from Facts to Fiction का बल्गेरियाई और An Elementary Study of Islam का डेनिश भाषा में पहली बार अनुवाद प्रकाशित हुआ है।

इसी तरह अलग-अलग समय में जो मैं सवालों के जवाब देता रहा हूँ, उन्हें भी किताब के रूप में प्रकाशित किया गया है और अंग्रेज़ी भाषा में भी। इसी तरह कुछ दूसरे व्याख्यान भी हैं, जिन्हें अलग-अलग भाषाओं, जिनमें फ्रेंच, अरबी, जर्मन, इंडोनेशियाई आदि शामिल हैं, में प्रकाशित किया गया है।

नज़ारत नश्रो-इशाअत क़ादियान

नज़ारत नश्रो-इशाअत क़ादियान ने भारत की स्थानीय 14 भाषाओं में अब तक कुरआन करीम का अनुवाद प्रकाशित किया है। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से क़ादियान से इस बार कुरआन करीम का एक फ़्रॉन्ट तौहीद नस्तालीक़ तैयार किया गया है। यह पहला नस्तालीक़ फ़्रॉन्ट है जो जमाअत अहमदिया की ओर से तैयार किया गया है। तफ़सीर-ए-सगीर का अरबी पाठ ख़त-ए-मंज़ूर फ़्रॉन्ट में और उर्दू पाठ इस नए फ़्रॉन्ट में तैयार हो चुका है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों के भारत की क्षेत्रीय भाषाओं में भी अनुवाद हुए हैं।

वकालत-ए-तस्लीफ़ यूके

वकालत-ए-तस्लीफ़ यूके ने एक नई भाषा लिथुआनियाई में कुरआन करीम का अनुवाद छपा है। अब जमाअत अहमदिया की ओर से विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित कुरआन करीम के अनुवादों की संख्या 79 हो गई है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबें नज़्मुल-हुदा, खुल्बा इल्हामिया, करामातुस्सादिक़ीन और मल्फूज़ात जिल्द पंचम के अंग्रेज़ी अनुवाद प्रकाशित हुए हैं। बराहीने अहमदिया चार हिस्सों का अंग्रेज़ी अनुवाद एक जिल्द में छपा गया है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की किताबों इंक़िलाब-ए-हक़ीक़ी, मतालिबात तहरीक-ए-जदीद, इरफ़ान-ए-इलाही और वाक़िआत ख़िलाफ़त-ए-अलवी के अंग्रेज़ी अनुवाद प्रकाशित हुए हैं।

जमाअतों में क्षेत्रीय और केंद्रीय पुस्तकालयों की स्थापना

दुनिया के 108 देशों में अब तक 732 पुस्तकालय स्थापित हो चुके हैं।

वकालत-ए-इशाअत तरसील

दुनिया भर की 22 भाषाओं में 116 पत्रिकाएँ, जर्नल और समाचार-पत्र प्रकाशित हो रहे हैं।

प्रदर्शनियों का आयोजन

दुनिया भर में 3688 प्रदर्शनियों के ज़रिए 10 लाख 7 हज़ार से अधिक लोगों तक इस्लाम-अहमदियत का संदेश पहुँचाया गया है।

रक़ीम प्रेस

रक़ीम प्रेस के ज़रिए प्रकाशित होने वाली किताबों की संख्या 1 लाख 57 हज़ार 240 है। रक़ीम प्रेस अल्लाह तआला के फ़ज़ल से यहाँ काफ़ी काम कर रहा है। अफ़्रीका के 7 देशों में हमारे प्रेस हैं, जहाँ 7 लाख 60 हज़ार किताबें और 82 लाख से अधिक समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ और तब्लीगी व प्रशिक्षण संबंधी साहित्य प्रकाशित हुआ है।

वकालत-ए-तामील व तनफ़ीज़ भारत की रिपोर्ट के अनुसार हज़रत खलीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु के मकान के परिसर में अल्लाह तआला के अस्तित्व के विषय पर प्रदर्शनी “अल-मुजीब” तैयार की गई है। क़ादियान में केंद्रीय रिसर्च सेल बोर्ड की स्थापना की गई है।

अरबी डेस्क के तहत अब तक प्रकाशित होने वाली किताबों की संख्या 200 हो चुकी है। इनमें रूहानी खज़ाइन की सभी उर्दू किताबें, मल्फूज़ात का पूरा सेट, हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की तफ़सीर-ए-कबीर की 10 जिल्दों का सेट और अन्य 34 किताबों के अनुवाद शामिल हैं। वर्ष के दौरान मजमूआ इश्तिहारात की तीनों जिल्दें और दावतुल अमीर का अरबी अनुवाद तथा कुछ अन्य अनुवाद भी प्रकाशित हुए हैं।

बंगला डेस्क के तहत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की 6 किताबों के अनुवाद छप चुके हैं। मेरे खुल्बात भी उन्होंने प्रकाशित किए हैं।

फ्रेंच डेस्क ने लेक्चर लाहौर का फ्रेंच अनुवाद प्रकाशित किया है।

तुर्की में भी अनुवाद का कुछ काम हो रहा है। स्पेनिश डेस्क ने वर्ष के दौरान 6 किताबों के अनुवाद पूरे किए हैं। चीनी डेस्क ने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के 1924 के धार्मिक सम्मेलन के व्याख्यान का अनुवाद किया है।

लीफ़लेट और फ़्लायर का वितरण

इस वर्ष 120 देशों में कुल मिलाकर 78 लाख 66 हज़ार से अधिक लीफ़लेट वितरित किए गए। इनके ज़रिए 3 करोड़ 92 लाख से अधिक लोगों तक संदेश पहुँचाया गया।

तहरीक-ए-वक्फ़-ए-नौ में शामिल लड़कों की संख्या 50 हज़ार 981 है और लड़कियों की संख्या 36 हज़ार 686 है। इस वर्ष 74 देशों से 3116 माता-पिता ने अपने होने वाले बच्चों को वक्फ़-ए-नौ में पेश किया।

रिव्यू ऑफ़ रिलिजन्स

रिव्यू ऑफ़ रिलिजन्स, जिसका प्रकाशन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने शुरू फ़रमाया था, अब अपने 124वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है। यह विभिन्न माध्यमों के ज़रिए अंग्रेज़ी, जर्मन, स्पेनिश और फ्रेंच भाषाओं में करोड़ों लोगों तक संदेश पहुँचा रहा है। वर्ष के दौरान इसका डिजिटल संस्करण

भी जारी किया गया।

अलफ़ज़ल इंटरनेशनल

अलफ़ज़ल इंटरनेशनल अब अल्लाह तआला के फ़ज़ल से काफ़ी बड़ी संख्या में प्रकाशित हो रहा है।

एमटीए इंटरनेशनल के 16 विभाग हैं। कुल 568 कर्मचारी दिन-रात सेवा में लगे हुए हैं।

इस वर्ष एमटीए अफ़्रीका के 10 वर्ष पूरे हुए हैं। इन 10 वर्षों में 7 हज़ार से अधिक कार्यक्रम तैयार हुए, जिनके ज़रिए हज़ारों लोग इस्लाम-अहमदियत में शामिल हुए। अफ़्रीका में जमाअत के अपने रेडियो स्टेशनों की संख्या 26 है।

वॉइस ऑफ़ इस्लाम रेडियो, यूके

वॉइस ऑफ़ इस्लाम रेडियो, यूके को भी 10 वर्ष पूरे हो गए हैं। इस समय इस रेडियो के कार्यक्रम ब्रिटेन के 13 शहरों में सीधे प्रसारित हो रहे हैं। इसके अलावा ऑनलाइन प्रसारण दुनिया भर में सुना जा सकता है।

अल-इस्लाम वेबसाइट पर हदीस सर्च इंजन और ऐप शुरू किया गया है। कुरआन सर्च इंजन में भी सुधार किया गया है।

अल-वसियत और Ten Conditions of Bai'at की ऐप्स का भी इज़ाफ़ा हुआ है। 36 नई अंग्रेज़ी ई-बुक्स के जुड़ने से इनकी कुल संख्या 260 हो गई है। अल-इस्लाम की टीम भी लगभग पूरी तरह स्वयंसेवकों पर आधारित है और बहुत अच्छा काम कर रही है।

इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ़ अहमदिया आर्किटेक्ट्स एंड इंजीनियर्स (IAAAE)

इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ़ अहमदिया आर्किटेक्ट्स एंड इंजीनियर्स (IAAAE) ने इस वर्ष 65 नल लगाए, जिससे 2 लाख लोगों को लाभ हुआ। इसी तरह मॉडल गाँव स्थापित किए गए हैं और सोलर लगाए गए हैं।

मजलिस नुसरतजहाँ

मजलिस नुसरत जहाँ के तहत अफ़्रीका के 54 देशों में 41 क्लीनिक और अस्पताल स्थापित हैं। पिछले वर्ष 5 लाख से अधिक रोगियों को इलाज की सुविधा उपलब्ध कराई गई। अफ़्रीका के 13 देशों में हमारे 620 प्राथमिक और मिडिल स्कूल तथा 80 सेकेंडरी स्कूल शैक्षिक सेवा कर रहे हैं।

ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट

ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट को कुल मिलाकर 25 लाख से अधिक लोगों की सेवा करने का अवसर मिला।

रब्ता-ए-नौ-मुबाइअीन

वर्ष के दौरान 95 देशों में कुल 54 हज़ार 485 नौ-मुबाइअीन से संपर्क हुआ।

नई बैअतों की संख्या

इस वर्ष 2 लाख 67 हज़ार 596 नई बैअतें हुई हैं। अल्हम्दुलिल्लाह, 132 देशों में लगभग 670 से अधिक क्रौमें अहमदियत में शामिल हुईं।

इनमें सबसे पहले नंबर पर नाइजीरिया है। फिर कांगो ब्राज़ाविल है। फिर गिनी बिसाऊ है। फिर कैमरून है। गिनी कोनाक्री, लाइबेरिया, कांगो किशासा, गाम्बिया, सेंट्रल अफ़्रीकन रिपब्लिक, सेनेगल, सिएरा लियोन, तंज़ानिया, आइवरी कोस्ट, नाइजर, बेनिन, टोगो, केन्या, घाना, युगांडा, मलावी, माली, बुर्किना फ़ासो, मेडागास्कर, चाड, ज़ाम्बिया, रवांडा, बुरुंडी, इथियोपिया और साओ टोमे शामिल हैं। अफ़्रीका के अन्य देशों में सोमालिया और ज़िम्बाब्वे, मायोट द्वीप, मिस्र, स्वाज़ीलैंड, लेसोथो, अंगोला, केप वर्डे, दक्षिण अफ़्रीका, नामीबिया आदि शामिल हैं।

एशिया में इंडोनेशिया में सबसे अधिक बैअतें हुई हैं। फिर भारत में, फिर बांग्लादेश में और फ़िलीपींस में। इसके अलावा मलेशिया, थाईलैंड, कज़ाख़िस्तान, श्रीलंका, कंबोडिया, जापान, सिंगापुर आदि भी शामिल हैं।

यूरोप में जर्मनी पहले नंबर पर है, फिर फ़्रांस, फिर नीदरलैंड, बेल्जियम, स्पेन, नॉर्वे और सर्बिया हैं। इसके अलावा स्विट्ज़रलैंड, अल्बानिया, ऑस्ट्रिया, फ़िनलैंड, रूस, चेक रिपब्लिक और माल्टा आदि में भी थोड़ी संख्या में बैअतें हुई हैं।

अमेरिकी क्षेत्र में कनाडा में अधिक बैअतें हुई हैं। इसके बाद अमेरिका है। पैराग्वे, मेक्सिको, बेलीज़, मेक्सिको, हैती, गुयाना, प्यूर्टो रिको, ब्राज़ील, एल

साल्वाडोर, सूरीनाम, पनामा, चिली, वेनेज़ुएला आदि भी शामिल हैं।

महाद्वीप ऑस्ट्रेलिया में सबसे पहले ऑस्ट्रेलिया है, फिर फ़िजी है। इसके बाद न्यूज़ीलैंड और सोलोमन आइलैंड में भी बैअतें हुई हैं आदि।

अरब देशों में भी बैअतें हुई हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि बैअतों के सिलसिले में कुछ घटनाएँ हैं। ये घटनाएँ लोगों की दिलचस्पी का अधिक कारण बनती हैं, इसलिए मैं कुछ घटनाएँ सुनाता हूँ।

बैअतों के घटनाक्रम — रेडियो के माध्यम से तब्लीगा

लाइबेरिया के अमीर साहब लिखते हैं कि मोमी के विंटनी में एक चीफ़ इमाम जमाअत के बारे में नकारात्मक विचार रखते थे और समझते थे कि अहमदियों का कलमा अलग है और वे नऊज़ुबिल्लाह रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर अमल नहीं करते। उनके क्षेत्र में अभी तक तब्लीगा नहीं हो सकी थी, क्योंकि वे बात सुनने के लिए भी तैयार नहीं होते थे।

एक दिन संयोग से इमाम साहब को रेडियो सुनते हुए जमाअत अहमदिया का कार्यक्रम सुनने का अवसर मिला। उस समय कुरआन और हदीस की रोशनी में बहुत सुंदर और तर्कपूर्ण ढंग से इस्लामी शिक्षाओं की सुंदरता बयान की जा रही थी। सीरत-ए-नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर बातचीत हो रही थी। उन्हें यह कार्यक्रम बहुत अच्छा लगा। इसलिए उन्होंने नियमित रूप से जमाअत के कार्यक्रम सुनना शुरू कर दिए, जिसने उनके दिल और दिमाग पर गहरा प्रभाव छोड़ा।

उन्होंने स्वयं हमारे मुबल्लिगा को निमंत्रण दिया कि शुक्रवार की नमाज़ उनकी मस्जिद में पढ़ाएँ और लोगों को जमाअत के विश्वासों के बारे में बताएँ। इसलिए हमारे मुबल्लिगा अपनी तब्लीगी टीम को लेकर उनके गाँव पहुँचे और नमाज़ पढ़ाई तथा रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार इमाम महदी अलैहिस्सलाम के आने और इस्लाम के पुनर्जागरण के बारे में बात की।

इसके बाद इमाम साहब ने खड़े होकर जमाअत में शामिल होने की घोषणा की। चूँकि वे अपने क्षेत्र के चीफ़ इमाम थे, उनके प्रभाव के कारण दो और गाँवों के लोग भी उनके साथ अहमदियत में शामिल हो गए। इस तरह एक ही दिन में तीन गाँवों में अहमदियत का पौधा लगा।

सपनों के माध्यम से मार्गदर्शन

चाड में हमारे मुअल्लिम कहते हैं कि वे काफी समय से अपनी बहन को तब्लीगा कर रहे थे। जब भी जमाअत का संदेश पहुँचाया जाता तो वह कहती रहती थीं कि अल्लाह तआला मुझे सही रास्ता दिखा दे या अल्लाह आपको लोगों को हिदायत दे दे। मुअल्लिम साहब के परिवार के अधिकतर लोग जमाअत के विरोधी हैं।

वह महिला बयान करती हैं कि कुछ दिन पहले मैं दिन के समय ज़िक्र-ए-इलाही में व्यस्त थी कि मैंने कश्फ़ की हालत में एक बुजुर्ग को देखा और साथ यह आवाज़ आई कि “अल-इमाम हुज्जत।” जब मैं अपने भाई से घर पर मिलने गई तो उसके मोबाइल में मैंने एक तस्वीर देखी और पूछा कि यह कौन हैं। भाई ने जवाब दिया कि ये हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हैं। मैंने भाई को बताया कि कुछ दिन पहले मैंने दिन के समय कश्फ़ की हालत में इन्हें देखा था और साथ यह आवाज़ भी सुनी थी। अब अल्लाह तआला ने मेरा मार्गदर्शन कर दिया है, इसलिए मैं बैअत करके जमाअत में शामिल होती हूँ।

उत्तरी कैमरून का एक शहर मरवा है। सदर साहब बयान करते हैं कि वहाँ मुअल्लिम अबूबकर साहब बच्चों को कुरआन शरीफ़ और धार्मिक जानकारी पढ़ाते थे और खुलफ़ा-ए-हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के नाम भी याद करवाते थे। एक ग़ैर-अहमदी बच्चे ने भी ये नाम याद कर लिए।

एक दिन वह बच्चा अपने घर में ज़ोर-ज़ोर से खुलफ़ा-ए-अहमदियत के नाम पढ़ने लगा। उसके पिता उस्मान मुहम्मद साहब ने जब उसे मेरा नाम दोहराते हुए सुना तो चौंक गए और पूछा कि यह क्या पढ़ रहे हो। बच्चे ने कहा कि हमें मस्जिद में ये नाम सिखाए गए हैं।

बच्चे के पिता हमारे सदर साहब के पास गए और इस नाम के बारे में पूछा। सदर ने बताया कि मुअल्लिम साहब बच्चों को धार्मिक जानकारी पढ़ाते हैं



खुत्ब: जुमअ:

सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद खलीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनसिहिल अज़ीज़,
दिनांक 14 अगस्त 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिरे (यू.के)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेमिसाल उदारता और दानशीलता

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ - بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ - الْحَمْدُ لِلَّهِ
رَبِّ الْعَالَمِينَ. الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ - مَلِكُ يَوْمِ الدِّينِ - إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ.
اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ. صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ - غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّالِّينَ

शुक्रगुज़ारी का इज़हार

जो शिक्षा हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दी और इस बारे में अपना जो आदर्श स्थापित किया, उसका मैं पिछले खुत्बों में उल्लेख करता रहा हूँ।

उसके उच्च स्तर को इस ज़माने में आपके सच्चे सेवक ने किस तरह समझा और अलग-अलग अवसरों पर अलग-अलग संदर्भों में किस तरह पेश किया, आज मैं उसका कुछ उल्लेख करूँगा।

इसी तरह आपके अपने कार्य क्या थे। घर में बच्चों को इस बारे में किस तरह नसीहत किया करते थे, एक अहमदी से आपकी क्या अपेक्षा थी। ये बातें इस ज़माने में हमारे लिए कार्य-योजना हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने नेमतों पर खुदा तआला का शुक्र अदा करने की अहमियत और हिकमत बयान करते हुए फ़रमाया कि:

“जब इंसान किसी ऊँचे दर्जे को प्राप्त कर लेता है तो फिर वह घमंडी हो जाता है, हालाँकि वह इस दौरान बहुत से नेक काम कर सकता है और मानव जाति को लाभ पहुँचा सकता है। खुदा तआला कुरआन शरीफ़ में फ़रमाता है:

لَنْ شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ وَلَنْ كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ
(इब्राहीम : 8)

यदि तुम मेरा शुक्र अदा करोगे तो मैं अपनी नेमतों को और भी बढ़ाऊँगा और यदि तुम कुफ़्र करोगे तो फिर मेरा अज़ाब भी बहुत सख्त है। यानी

* * इंसान पर जब खुदा तआला के उपकार हों तो उसे चाहिए कि वह उसका शुक्र अदा करे और इंसानों की भलाई का ध्यान रखे और यदि कोई ऐसा न करे और उलटे जुल्म शुरू कर दे तो फिर खुदा तआला उससे वे नेमतें छीन लेता है और अज़ाब करता है।”

(मलफूज़ात, जिल्द 10, पृष्ठ 200, संस्करण 2022 ई.)

एक जगह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

“सबसे पहले अल्लाह का शुक्र है जिसने हमें जीवन दिया, स्वास्थ्य दिया, तंदुरुस्ती प्रदान की, अमन दिया और धर्म के प्रचार के लिए साधन उपलब्ध किए और वास्तव में सच्ची बात यही है कि यदि खुदा तआला की इन नेमतों को गिनना चाहें तो हरगिज़ संभव नहीं कि उस खुदा की मेहरबानियों और उपकारों को गिना जा सके।”

(मलफूज़ात, जिल्द 10, पृष्ठ 330-331, संस्करण 2022 ई.)

फिर एक अवसर पर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

“मुसलमानों को अल्लाह तआला का बहुत शुक्र करना चाहिए जिसने उन्हें ऐसा धर्म प्रदान किया है जो ज्ञान और व्यवहार, दोनों रूप से हर प्रकार के बिगाड़, बुरी बातों और हर प्रकार की बुराई से पवित्र है। यदि इंसान विचार और चिंतन से देखे तो उसे मालूम होगा कि वास्तव में सभी प्रशंसाओं और गुणों का अधिकारी केवल अल्लाह तआला ही है और कोई इंसान या प्राणी वास्तव में और सच्चे अर्थों में प्रशंसा और स्तुति का अधिकारी नहीं है।

यदि इंसान बिना किसी स्वार्थ के देखे तो उसके सामने स्पष्ट हो जाएगा कि जो व्यक्ति प्रशंसा का अधिकारी माना जाता है, वह या तो इसलिए अधिकारी हो सकता है कि ऐसे समय में, जब कोई अस्तित्व नहीं था और किसी अस्तित्व की कोई खबर भी नहीं थी, उसने उसे पैदा किया हो; या इसलिए कि ऐसे समय में जब कोई अस्तित्व नहीं था और यह भी मालूम नहीं था कि अस्तित्व, अस्तित्व की स्थिरता, स्वास्थ्य की रक्षा

और जीवन को बनाए रखने के लिए किन-किन साधनों की आवश्यकता है, उसने वे सभी साधन उपलब्ध किए हों; या ऐसे समय में जब उस पर बहुत-सी मुसीबतें आ सकती थीं, उसने दया की हो और उसे सुरक्षित रखा हो; या इसलिए प्रशंसा का अधिकारी हो सकता है कि मेहनत करने वाले की मेहनत को व्यर्थ न जाने दे और मेहनत करने वालों के अधिकार पूरी तरह अदा करे। यद्यपि ऊपर से मेहनत करने वाले के अधिकार देना उसका बदला चुकाना है, लेकिन ऐसा व्यक्ति भी उपकारी हो सकता है जो पूरे तौर पर अधिकार अदा करे।”

तो ये बातें हैं, अलग-अलग चीज़ें हैं कि यदि ये चीज़ें मौजूद न हों और फिर कोई उनकी सहायता करे, तभी उसकी प्रशंसा की जा सकती है। फ़रमाया कि:

“ये उच्च स्तर के गुण हैं जो किसी को प्रशंसा और स्तुति का अधिकारी बना सकते हैं। अब विचार करके देख लो कि वास्तव में इन सभी प्रशंसाओं का अधिकारी केवल अल्लाह तआला ही है।”

ये जो तीन-चार बातें मैंने बयान की हैं, आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि इनका अधिकारी तो अल्लाह तआला ही है,

“जो पूर्ण रूप से इन गुणों से युक्त है और किसी में ये गुण नहीं हैं।”

(रूदाद जलसा दुआ, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 15, पृष्ठ 597-598)

कोई और व्यक्ति नहीं जिसमें ये गुण हों। न कोई ऐसी हस्ती है जिसमें ये गुण हों।

फिर इस्लाम के पुनर्जागरण और सिलसिला अहमदिया की स्थापना पर अल्लाह तआला का शुक्र

अदा करने की ओर ध्यान दिलाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

“ऐ बुद्धिमानो! तुम इस बात पर आश्चर्य न करो कि खुदा तआला ने इस आवश्यकता के समय और इन गहरे अंधकार के दिनों में एक आकाशीय प्रकाश उतारा और एक बंदे को सामान्य भलाई के लिए विशेष करके, इस्लाम के कलमे को ऊँचा करने और नूर फैलाने के उद्देश्य से, हज़रत ख़ैरुल अनाम की सहायता और मुसलमानों की मदद के लिए तथा उनकी अंदरूनी अवस्था को साफ करने के इरादे से दुनिया में भेजा। आश्चर्य तो इस बात में होता कि वह खुदा जो इस्लाम धर्म का सहायक है, जिसने वादा किया था कि मैं हमेशा कुरआनी शिक्षा का रक्षक रहूँगा और उसे ठंडा, बेरौनक और बिना प्रकाश के नहीं होने दूँगा, वह इस अंधकार को देखकर और इन अंदरूनी तथा बाहरी बिगाड़ों पर नज़र डालकर चुप रहता और अपने उस वादे को याद न करता जिसे वह अपने पवित्र कलाम में दृढ़ रूप से बयान कर चुका था।”

अल्लाह तआला ने जो इनाम भेजा है वह तो अल्लाह तआला के वादे के अनुसार है और इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं। आश्चर्य तो उस समय होता जब अल्लाह तआला इस वादे को पूरा न करता और इस्लाम में जो गिरावट का सिलसिला है वह चलता ही जाता।

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

“फिर मैं कहता हूँ कि यदि आश्चर्य की कोई जगह थी तो यह थी कि उस पवित्र रसूल की यह स्पष्ट और खुली भविष्यवाणी गलत साबित होती जिसमें फ़रमाया गया था कि हर सदी के आरंभ पर खुदा तआला ऐसे व्यक्ति को पैदा करता रहेगा जो उसके धर्म का नवीनीकरण करेगा। इसलिए यह आश्चर्य का स्थान नहीं बल्कि हज़ारों-हज़ार शुक्र करने का स्थान और ईमान और विश्वास बढ़ाने का समय है।”

और इस तरह, जैसा कि हम देखते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आने तक हर सदी में अलग-अलग क्रौमों में मुजद्दिद आते रहे और आपको अल्लाह तआला ने फिर अंतिम हज़ार वर्ष के लिए मुजद्दिद बनाकर, मसीह मौऊद और महदी मअहूद का स्थान देकर भेजा। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि यह हज़ार शुक्र करने का स्थान और ईमान और विश्वास बढ़ाने का समय है,

“कि खुदा तआला ने अपने फ़ज़ल और करम से अपने वादे को पूरा कर दिया और अपने रसूल की भविष्यवाणी में एक मिनट का भी अंतर नहीं पड़ने दिया और न

केवल इस भविष्यवाणी को पूरा करके दिखाया बल्कि भविष्य के लिए भी हज़ारों भविष्यवाणियों और चमत्कारों का द्वार खोल दिया।”

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आने से अल्लाह तआला ने और भी बहुत-सी भविष्यवाणियाँ पूरी फ़रमाईं। फ़रमाते हैं:

“यदि तुम ईमानदार हो तो शुक्र करो और शुक्र के सजदे अदा करो कि वह ज़माना जिसका इंतज़ार करते-करते तुम्हारे बुजुर्ग पूर्वज गुज़र गए और अनगिनत आत्माएँ उसकी चाहत में ही इस दुनिया से चली गईं, वह समय तुमने पा लिया।”

मसीह मौऊद के आने का इंतज़ार पुराने मुसलमान करते रहे, विद्वान करते रहे, बुजुर्ग करते रहे लेकिन उन्हें वह समय नहीं मिला। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तुम भाग्यशाली हो कि तुमने वह समय पा लिया। अब अल्लाह तआला का शुक्र अदा करो।

“अब इसकी क़द्र करना या न करना और इससे लाभ उठाना या न उठाना तुम्हारे हाथ में है। मैं इसे बार-बार बयान करूँगा और इसके इज़हार से मैं रुक नहीं सकता कि मैं वही हूँ जो समय पर लोगों की सुधार के लिए भेजा गया।”

अल्लाह तआला ने मेरा रूप देकर अपना वादा पूरा किया।

“ताकि धर्म को नए रूप में दिलों में स्थापित कर दिया जाए।”

(फ़त्वे इस्लाम, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 3, पृष्ठ 6 से 8)

काश कि आपके विरोधी और आपको न मानने वाले मुसलमान इस बात को समझें और अल्लाह तआला के शुक्रगुज़ार होते हुए अल्लाह तआला के भेजे हुए को मान लें और अपने आपको एकता की माला में पिरो लें, ताकि जिन कठिनाइयों से आजकल मुसलमान गुज़र रहे हैं उनसे वे बच सकें।

सच्चाई के एक खोजी को हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने संबोधित करते हुए फ़रमाया:

“ख़ुदा का शुक्र करो कि उसने ठीक समय पर सहायता की है और इस सिलसिले को स्थापित किया है। इसलिए तुम्हारे लिए उचित है कि जो फ़ज़ल तुम्हें दिया गया है उसे व्यर्थ न करो और आदर की दृष्टि से देखो और जो मदद और सहायता तुम्हें दी गई है उसकी क़द्र करो। निश्चित रूप से याद रखो कि ख़ुदा की मदद के बिना और उसके बुलाए बिना कोई व्यक्ति सच्चाई से और पूरी शक्ति के साथ किसी बात को बयान नहीं कर सकता। उसके बिना प्रमाण मिलते ही नहीं।”

अल्लाह तआला की मदद हो तो तभी प्रमाण मिलते हैं।

“और बयान करने का ढंग नहीं दिया जाता और यह भी ख़ुदा तआला का विशेष फ़ज़ल होता है कि इस बयान के ढंग से भलाई की शक्ति रखने वाले उस व्यक्ति को, जो ख़ुदा की शक्ति और सामर्थ्य पाकर रूहुल-कुदुस से भरकर बोलता है, पहचान लेते हैं।”

अल्लाह तआला का यह फ़ज़ल है कि लोग अल्लाह तआला के भेजे हुए को पहचान लेते हैं।

“इसलिए तुम पर यह ख़ुदा तआला का बहुत बड़ा उपकार है कि उसने तुम्हें यह शक्ति दी है और पहचानने की आँख दी है।”

सच्चाई के खोजी को आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तुम्हें सच्चाई की तलाश है तो अल्लाह तआला का शुक्र अदा करो कि अल्लाह तआला ने तुम्हें यह बुद्धि दी। बहुत से लोग हैं जो अपने आपको बड़े विद्वान समझते हैं लेकिन बुद्धि नहीं है। विरोध में बढ़ते रहते हैं लेकिन तुम शुक्र करो कि अल्लाह तआला ने तुम्हें बुद्धि दी। अल्लाह तआला के बहुत बड़े उपकार हैं। फ़रमाया:

“यदि वह यह फ़ज़ल न करता तो जैसे और लोग पदों में हैं और गालियाँ देते हैं, तुम भी उन्हीं में होते।”

इसलिए जिन्होंने स्वीकार किया वे भाग्यशाली हैं।

“जिस चीज़ ने तुम्हें खींचा है वह केवल ख़ुदा तआला का फ़ज़ल है।”

फिर आप अलैहिस्सलाम ने उदाहरण दिया है:

“जैसे मियाँ अब्दुल हक़ ही को देखो कि ख़ुदा का फ़ज़ल उनकी सहायता न करता तो ये किस तरह इस ऐश की जगह से निकल सकते थे।”

यहाँ जो उदाहरण आप अलैहिस्सलाम मियाँ अब्दुल हक़ साहब का दे रहे हैं, उससे मुराद मुंशी अब्दुल हक़ हैं। क़सूर के रहने वाले थे। विद्यार्थी थे। उस समय बी.ए. में पढ़ते थे। जो मुसलमान होने के बावजूद तीन वर्ष पहले, जब आप अलैहिस्सलाम यह बयान कर रहे थे, ईसाई हो गए थे और अलहक़म तथा हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम की कुछ लेखन सामग्री पढ़कर उन्होंने हज़रत अक़दस की सेवा में एक पत्र लिखा कि वे इस्लाम की सच्चाई और सत्यता को व्यावहारिक रूप में देखना चाहते हैं। मुझे तो इस्लाम में कुछ दिखाई नहीं दिया, इसलिए मैं इसे व्यावहारिक रूप में

देखना चाहता हूँ। उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को लिखा। इस पर हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने उन्हें लिख भेजा कि वे कम से कम दो महीने तक यहाँ क़ादियान आकर रहें। इसलिए उन्होंने दारुल-अमान का इरादा किया, वहाँ आए और 1901 ई. की बात है कि ये वहाँ पहुँचे और फिर आपके पास रहे, विशेष रूप से ऐसी स्थिति में कि उनके पास कई नसीहत करने वाले भी जमा हुए।

ऐसी स्थिति में वे पहुँचे कि जब उन्होंने वहाँ आने का इरादा किया तो कई लोगों ने उन्हें नसीहत की कि क़ादियान न जाओ। और उन्होंने मना भी किया कि क़ादियान मत जाओ, बल्कि एक ने गाली भी दी, हालाँकि गाली देना उनके धर्म में मना है और सामान्य रूप से सभ्यता और शिष्टाचार के भी विरुद्ध है। लेकिन इन सभी बातों पर ख़ुदा का फ़ज़ल हावी हो गया और उन्हें खींचकर ले आया। उन्हें बुराई के साधन ही उपलब्ध नहीं हुए, वरना उस समय उनकी शादी नहीं थी। फ़रमाया कि कभी-कभी शादी की वजह से भी बड़े मामले पैदा हो जाते हैं।

“यदि ये पत्नी कर लेते तो फिर परीक्षा सामने आ जाती, मगर ख़ुदा ने हर तरह से बचाया। ख़ुदा का फ़ज़ल है, नया पैदा हुआ नहीं होता।”

यानी यह कोई नई बात नहीं है। यह अल्लाह तआला का फ़ज़ल होता है।

“जिस पर वह अपना करम करता है उसे हर तरह से”

यह कोई नई बात नहीं है। अल्लाह तआला तो जिस पर अपना करम करता है उसे हर तरह से

“बचा लेता है। यह खयाल मत करो कि हम मुसलमान हैं। इस्लाम बड़ी नेमत है। इसकी क़द्र करो और शुक्र करो। इसके अंदर दर्शन है जो केवल ज़बान से कह देने से प्राप्त नहीं होती।”

(माखूज़ अज़ मलफूज़ात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, जिल्द 2, पृष्ठ 435-436, संस्करण 2022 ई.)(माखूज़ अज़ मलफूज़ात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, जिल्द 2, पृष्ठ 515-516, संस्करण 2022 ई.)(उर्दू लुगत, जिल्द 17, पृष्ठ 986)

केवल मुसलमान कहने से मामला पूरा नहीं होता। जो बातें हैं, जो कार्य हैं, जो शिक्षा है, उस पर चलना भी होगा।

सिलसिला अहमदिया के लिए निष्ठा और प्रेम रखने वालों का शुक्रिया

अदा करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

“इस स्थान पर मैं इस बात के इज़हार और इस शुक्र को अदा किए बिना नहीं रह सकता कि ख़ुदा तआला के फ़ज़ल और करम ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा। मेरे साथ भाईचारे का संबंध स्थापित करने वाले और इस सिलसिले में दाख़िल होने वाले, जिसे ख़ुदा तआला ने अपने हाथ से स्थापित किया है, प्रेम और निष्ठा के रंग में एक अजीब ढंग से रंगे हुए हैं। न मैंने अपनी मेहनत से बल्कि ख़ुदा तआला ने अपने विशेष उपकार से ये सच्चाई से भरी हुई रूहें मुझे प्रदान की हैं।”

आप अलैहिस्सलाम अपने वफ़ादार लोग की, जो अहमदियत में आए, प्रशंसा करते हुए फ़रमा रहे हैं कि ये सच्चाई से भरी हुई रूहें मुझे प्रदान की हैं।

“सबसे पहले मैं अपने एक आध्यात्मिक भाई का उल्लेख करने के लिए दिल में जोश पाता हूँ, जिनका नाम उनके नूर-ए-इख़लास की तरह नूरुद्दीन है। मैं उनकी कुछ धार्मिक सेवाओं को, जो वे अपने हलाल माल को खर्च करके इस्लाम का कलमा ऊँचा करने के लिए कर रहे हैं, हमेशा हसरत की नज़र से देखता हूँ कि काश वे सेवाएँ मुझसे भी अदा हो सकतीं।”

अब इतना कुछ आप इस्लाम की खातिर कर रहे हैं फिर भी आप अलैहिस्सलाम फ़रमा रहे हैं कि मुझे हज़रत मौलाना नूरुद्दीन साहब की कुर्बानियों को देखकर बड़ी हसरत होती है कि काश मैं भी इतनी आर्थिक सेवाएँ कर सकता।

“उनके दिल में धर्म की सहायता के लिए जोश भरा हुआ है, उसके विचार से कुदरत-ए-इलाही का चिल मेरी आँखों के सामने आ जाता है कि वह किस तरह अपने बंदों को अपनी ओर खींच लेता है। वे अपने सारे माल और सारी शक्ति और सारे उपलब्ध साधनों के साथ हर समय अल्लाह और रसूल की आज्ञापालन के लिए तैयार खड़े हैं”

यानी हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में फ़रमा रहे हैं:

“और मैं अनुभव से, केवल अच्छे विचार से नहीं बल्कि सही ज्ञान रखता हूँ कि उन्होंने मेरी राह में माल ही क्या, बल्कि जान और सम्मान तक देने में कोई कमी नहीं की और यदि मैं अनुमति देता तो वे सब कुछ इस राह में कुर्बान करके अपनी आध्यात्मिक संगति की तरह शारीरिक संगति और हर समय साथ रहने का अधिकार

भी अदा करते।”

(फ़ल्हे इस्लाम, रूहानी खज़ाइन, जिल्द 3, पृष्ठ 35)

स्थायी रूप से मेरे साथ रहते। यह 1890 ई. के अंत की बात है जब आप अलैहिस्सलाम ने अपनी पुस्तक फ़ल्हे इस्लाम में यह लिखा। बाद में हज़रत मौलाना नूरुद्दीन साहब रज़ियल्लाहु अन्हु सब कुछ छोड़कर आपकी सेवा में उपस्थित हो गए थे और आपके साथ ही रहे।

अल्लाह तआला की विशेषता रहमानियत के अंतर्गत शारीरिक और आध्यात्मिक उपकारों का उल्लेख

करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

“लाख-लाख प्रशंसा और स्तुति उस सर्वशक्तिमान हस्ती के योग्य है जिसने सारी आत्माओं और शरीरों को बिना किसी पदार्थ और मूल रूपरेखा के अपने ही आदेश और हुक्म से पैदा करके अपनी महान शक्ति का नमूना दिखाया और सभी पवित्र आत्माओं, अर्थात् नबियों को बिना किसी शिक्षक और प्रशिक्षक के स्वयं शिक्षा और प्रशिक्षण देकर अपने पुराने फ़ज़लों का निशान प्रकट किया।”

यानी जिन नबियों को अल्लाह तआला भेजता है, उन्हें भी अपनी ओर से शिक्षा दी, उनका प्रशिक्षण किया और उन पर अपने आदेश उतारे। फ़रमाया:

“सुब्हानल्लाह! क्या ही रहमान और उपकार करने वाली वह हस्ती है जिसने बिना हमारे किसी अधिकार के”

यानी बिना हमारे किसी अधिकार के

“हम कमज़ोरों के सारे काम स्वयं बनाए। हमारे शारीरिक अस्तित्व को बनाए रखने के लिए सूरज और चाँद और बादलों और हवाओं को काम में लगाया और हमारे आध्यात्मिक प्रबंध के लिए तौरात और इंजील और फुरक़ान और सभी आकाशीय किताबों को ठीक समय पर पहुँचाया।”

हे इलाही! आगे आप अलैहिस्सलाम दुआ कर रहे हैं:

“हे इलाही! तेरा हज़ार-हज़ार शुक्र है कि तूने हमें अपनी पहचान का स्वयं मार्ग बताया और अपनी पवित्र किताबें उतारकर विचार और बुद्धि की गलतियों और भूलों से बचाया और दुरुद और सलाम हो सरदार-ए-रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उनकी संतान और साथियों पर, जिनके द्वारा ख़ुदा ने एक भटकी हुई दुनिया को सीधी राह पर चलाया।

वह पालन-पोषण करने वाले और लाभ पहुँचाने वाले, जो भूली हुई सृष्टि को फिर सीधी राह पर लाए। वह उपकारी और उपकार करने वाले, जिसने लोगों को शिर्क और मूर्तियों की मुसीबत से छुड़ाया। वह नूर और नूर फैलाने वाले, जिसने एकेश्वरवाद की रोशनी दुनिया में फैलाई। वह हकीम और समय के इलाज करने वाले, जिसने बिगड़े हुए दिलों के कदम सच्चाई पर जमा दिए। वह करीम और करामत वाले, जिसने मुर्दों को जीवन का पानी पिलाया।”

यानी जो लोग आध्यात्मिक दृष्टि से मुर्दा थे।

“वह रहम करने वाले और मेहरबान, जिसने उम्मत के लिए दुख उठाया और दर्द सहा। वह बहादुर और पहलवान जो हमें मौत के मुँह से निकालकर लाया।”

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में फ़रमा रहे हैं कि वह पहलवान जो हमें मौत के मुँह से निकालकर लाया।

“वह सहनशील और निःस्वार्थ इंसान जिसने बंदगी में सिर झुकाया”

यानी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

“और अपनी हस्ती को मिट्टी में मिला दिया। वह पूर्ण एकेश्वरवादी और ज्ञान का समुद्र, जिसे केवल ख़ुदा का जलाल पसंद आया और गैर को अपनी नज़र से गिरा दिया। वह रहमान की शक्ति का चमत्कार, जो अनपढ़ होकर भी सभी पर सच्चे ज्ञान में प्रभावी रहा और हर क्रौम को अपनी गलतियों और भूलों का दोषी ठहराया।”

(बराहीने अहमदिया, भाग प्रथम, रूहानी खज़ाइन, जिल्द 1, पृष्ठ 16-17)

(उर्दू लुगत, जिल्द 22, पृष्ठ 498-499)

यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रशंसा है। पहले तो आप अलैहिस्सलाम ने तौरात और इंजील से उदाहरण दिया है, लेकिन उन क्रौमों के लिए जिन्हें तौरात और इंजील के माध्यम से सही रास्ता दिखाई दिया, उसके बाद जब दुनिया में फिर बिगाड़ पैदा हुआ तो उसके लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हस्ती थी जिन्हें अल्लाह तआला ने भेजा और उन्होंने बंदों को ख़ुदा से मिलाया।

फिर हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

“ऐ रेबूल आलमीन! मैं तेरे उपकारों का शुक्र अदा नहीं कर सकता। तू बहुत ही रहम करने वाला और करीम है और तेरे मुझ पर अनगिनत उपकार हैं। मेरे गुनाह क्षमा कर ताकि मैं नष्ट न हो जाऊँ। मेरे दिल में अपनी सच्ची मुहब्बत डाल ताकि मुझे

जीवन प्राप्त हो और मेरी पर्दापोशी फ़रमा और मुझसे ऐसे कार्य करा जिनसे तू प्रसन्न हो जाए। मैं तेरे कृपालु चेहरे की पनाह में इस बात से शरण माँगता हूँ कि तेरा क्रोध मुझ पर आए। दया कर और दुनिया और आखिरत की मुसीबतों से मुझे बचा कि हर एक फ़ज़ल और करम तेरे ही हाथ में है। आमीन, सुम्मा आमीन।”

(मलफूज़ात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, जिल्द 1, पृष्ठ 217, संस्करण 2022 ई.)

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम लिखते हैं:

“हज़ार-हज़ार शुक्र उस कृपालु ख़ुदा का है जिसने हमें ऐसा धर्म प्रदान किया जो ख़ुदा की पहचान और ख़ुदा का डर पैदा करने का ऐसा साधन है जिसकी मिसाल कभी और किसी ज़माने में नहीं पाई गई और हज़ारों दुरुद उस मासूम नबी पर जिसके माध्यम से हम इस पवित्र धर्म में दाख़िल हुए और हज़ारों रहमतें नबी करीम के साथियों पर हों जिन्होंने अपने खून से इस बाग़ की सिंचाई की।”

(नुसरतुल हक़, बराहीने अहमदिया, भाग पंचम, रूहानी खज़ाइन, जिल्द 21, पृष्ठ 25)

फिर एक जगह फ़रमाया:

“जो उसकी नज़र में रास्तबाज़ और सच्चे हैं वे हमेशा अज्ञानी लोगों की ज़बान और हाथ से तकलीफ़ें उठाते चले आए हैं।”

जो अल्लाह तआला की नज़र में रास्तबाज़ हैं, सच्चे हैं, वास्तव में धर्म के पाबंद हैं, अल्लाह तआला से वफ़ा करने वाले हैं, वे अज्ञानियों की ज़बानों और हाथों से तकलीफ़ उठाते हैं, जिस तरह आजकल इस ज़माने में कुछ स्थानों पर अहमदी भी उठा रहे हैं।

“इसलिए चूँकि अल्लाह की पुरानी सुन्नत यही है, इसलिए यदि हम भी अपने और पराए से”

अपनों या गैरों से “कुछ तकलीफ़ उठाएँ तो हमें शुक्र अदा करना चाहिए और खुश होना चाहिए कि हम इस सच्चे प्रिय की नज़र में इस योग्य तो ठहरे कि उसकी राह में दुख दिए जाएँ।”

अल्लाह तआला की राह में दुख दिए जा रहे हैं तो यह भी हमारी खुशकिस्मती है और हमें खुश होना चाहिए और अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए क्योंकि अल्लाह की राह में दुख वही उठाते हैं जिन्हें अल्लाह तआला पसंद करता है।

“और सताए जाएँ। इसलिए इस तरह दुख उठाना तो हमारी सच्ची सौभाग्य की बात है, लेकिन जब हम दूसरी ओर देखते हैं कि कुछ धर्म-दुश्मन अपनी झूठी बातें गढ़ने से केवल हमारी तकलीफ़ पहुँचाने तक सीमित नहीं रहते बल्कि बिना समझ और जानकारी वाले लोगों को फ़ितने में डालते हैं तो इस स्थिति में हम अपने ऊपर आवश्यक समझते हैं कि जहाँ तक संभव हो उन अनजान लोगों को फ़ितने से बचाएँ।”

(मजमूआ इश्तिहारात, जिल्द प्रथम, पृष्ठ 141-142)

यानी कि उन्हें भी वास्तविकता बयान करें। लोगों को नुकसान पहुँचाने के लिए उनकी जो बुराइयाँ हैं, उन्हें प्रकट करें। फ़ितने से बचाने का अर्थ यह नहीं है कि हम भी उनके जैसी बेहूदा भाषा इस्तेमाल करने लग जाएँ जो विरोधी करते हैं और बदतमीज़ी पर उतर आएँ, बल्कि इस्लामी शिक्षा की सीमा में रहते हुए उनके ग़लत प्रचार और आरोपों का उत्तर दें।

हमारे हर प्रचारक को भी यह बात याद रखनी चाहिए। कभी-कभी हम लोग आपत्ति करने वालों की आपत्तियों पर अपनी ओर से भी ऐसी बातें कर जाते हैं जो आपत्ति करने वाले को यह कहने का अवसर देती हैं कि ये तुम लोगों के आचरण हैं! हमारे आचरण तो बहुत ऊँचे होने चाहिए। हाँ, वास्तविकता अवश्य बयान करें लेकिन आचरण की सीमा में रहते हुए। उनकी तरह भाषा का प्रयोग नहीं करना।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

“यह विनम्र ख़ुदाए तआला के उपकारों का शुक्र अदा नहीं कर सकता कि इस तकफ़ीर के समय में, जब हर ओर से इस ज़माने के विद्वानों की आवाज़ें आ रही हैं कि

اَلَسْتُ مُؤْمِنًا”

कि तू मोमिन नहीं है। “अल्लाह जल्ल शानुहू की ओर से यह आवाज़ है कि

قُلْ اِنِّي اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِينَ”

कह दे कि मैं मामूर होकर आया हूँ और मैं सबसे पहले ईमान लाने वालों में हूँ।

“एक ओर मौलवी साहब कह रहे हैं कि किसी तरह इस व्यक्ति को जड़ से समाप्त करो और दूसरी ओर इल्हाम होता है:

يَتَرَبَّصُّونَ عَلَيْكَ الدَّوَائِرَ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ”

वे तुझ पर विपत्तियों के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, बुरी दशा उन्हीं पर आएगी।

अंत में यही परिणाम निकलना है। इशाअल्लाह।

“और एक ओर वे कोशिश कर रहे हैं कि इस व्यक्ति को बहुत अपमानित और बदनाम करें और दूसरी ओर खुदा वादा कर रहा है कि

إِنِّي مُهَيِّئُ مَنْ أَرَادَ إِهَانَتَكَ اللَّهُ أَجْرُكَ اللَّهُ يُعْطِيكَ جَلَالًا

जो तेरी बेइज्जती चाहते हैं मैं उसे बेइज्जत करूँगा। अल्लाह तेरा बदला देने वाला है। अल्लाह तुझे तेरा जलाल प्रदान करेगा।

“और एक ओर मौलवी लोग फ़तवों पर फ़तवे लिख रहे हैं कि इस व्यक्ति की आस्था और पैरवी से इंसान काफ़िर हो जाता है और दूसरी ओर खुदाए तआला अपने इस इल्हाम पर लगातार ज़ोर दे रहा है कि

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ

कह दे कि यदि तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह तआला तुमसे मुहब्बत करेगा।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी अल्लाह तआला ने यह फ़रमाया था और आपकी पैरवी में आपके सच्चे सेवक को भी अल्लाह तआला ने यह फ़रमाया है क्योंकि आप अलैहिस्सलाम ही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक हैं और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मानना आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पूर्ण आज्ञापालन है क्योंकि आप अलैहिस्सलाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पूर्ण आज्ञाकारी और सेवक हैं।

“अर्थात ये सभी मौलवी साहब खुदा तआला से लड़ रहे हैं। अब देखिए कि जीत किसकी होती है।”

(निशान-ए-आसमानी, रूहानी खज़ाइन, जिल्द नंबर 4, पृष्ठ 422-423)

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत की जो तरक्कियाँ हैं, धीरे-धीरे जिस तरह जमाअत बढ़ रही है, वह इन लोगों के लिए पर्याप्त उत्तर है यदि इन लोगों में देखने की दृष्टि और शर्म हो।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

“इस स्थान पर मैं इस शुक्र को अदा करने से नहीं रह सकता कि जिस तरह खुदा तआला ने हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सहायता में अपनी वही के द्वारा काफ़िरों को दोषी ठहराया और फ़रमाया कि यह मेरा नबी इतने ऊँचे स्तर का नेक आचरण रखता है कि तुममें शक्ति नहीं कि उसकी पिछली चालीस वर्ष की ज़िंदगी में कोई दोष और कमी निकाल सको, जबकि वह चालीस वर्ष तक दिन-रात तुम्हारे बीच ही रहा है और न तुम्हें यह शक्ति है कि उसके उच्च परिवार में, जो सम्मान, पवित्रता, नेतृत्व और संपन्नता वाला परिवार है, एक ज़रा-सा दोष निकाल सको।

फिर तुम सोचो कि जो व्यक्ति ऐसे उच्च और पवित्र और श्रेष्ठ परिवार में से है और उसकी चालीस वर्ष की ज़िंदगी जो तुम्हारे सामने गुज़री, गवाही दे रही है कि झूठ और झूठी बातें बनाना उसका काम नहीं है, तो फिर इन गुणों के साथ, जबकि वह आकाशीय निशान दिखा रहा है और खुदा तआला की सहायता उसके साथ है और वह ऐसी शिक्षा लाया है जिसके सामने तुम्हारे विश्वास पूरी तरह गंदे, अपवित्र और शिर्क से भरे हुए हैं, तो इसके बाद तुम्हें इस नबी के सच्चा होने में कौन-सा संदेह रह जाता है।”

इस्लाम के विरोधियों को जवाब देने की बात की कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वह वास्तविक, वह सच्चे नबी हैं जो अल्लाह तआला की ओर से आए और दुनिया को अल्लाह तआला से मिलाने के साधन किए। और फिर अपने बारे में फ़रमाते हैं:

“इसी प्रकार खुदा तआला ने मेरे विरोधियों और मुझे झूठलाने वालों को दोषी ठहराया है।”

कि मैं भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सच्चा सेवक हूँ। मेरे बारे में भी अल्लाह तआला का यही वादा है।

“चुनाँचे बराहीने अहमदिया...” का संदर्भ आप अलैहिस्सलाम ने दिया है कि इसमें:

“मेरे संबंध में यह इल्हाम है जिसके प्रकाशित होने पर बीस वर्ष बीत गए और वह यह है: وَلَقَدْ لَبِثْتُ فِيكُمْ عُمُرًا مِّن قَبْلِهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ यानी इन विरोधियों से कह दे कि मैं चालीस वर्ष तक तुम्हारे बीच ही रहा हूँ और इस लंबे समय तक तुम मुझे देखते रहे हो कि मेरा काम झूठ और झूठी बातें नहीं हैं और खुदा ने मुझे अपवित्र जीवन से सुरक्षित रखा है। तो फिर जो व्यक्ति इतनी लंबी अवधि, अर्थात चालीस वर्ष तक हर झूठ, शरारत, चाल और बुराई से सुरक्षित रहा और कभी उसने लोगों से झूठ नहीं बोला तो फिर यह कैसे संभव है कि अपनी पुरानी आदत के विपरीत अब वह खुदा तआला

पर झूठ बाँधने लगे।”

(तिरयाकुल कुलूब, रूहानी खज़ाइन, जिल्द 15, पृष्ठ 282-283)

आप अलैहिस्सलाम की सीरत के बहुत से पहलू जो पहले बयान कर चुका हूँ, उनमें यह स्पष्ट रूप से सामने आ चुका है कि विरोधी भी आपकी प्रशंसा किया करते थे कि आपने कभी झूठ नहीं बोला। तो ये शुक्रगुज़ारी की वे बातें हैं जिनमें आपने अल्लाह तआला के फ़ज़लों का शुक्र अदा किया है और अपने सहायकों और मददगारों के लिए भी शुक्रगुज़ारी की भावनाओं का इज़हार किया है।

फिर इन बातों के अलावा आप अलैहिस्सलाम

बच्चों में शुक्रगुज़ारी की अहमियत पैदा करने की कोशिश

फ़रमाते थे। घर में आपका किस तरह तरीका था, इस संबंध में एक रिवायत आती है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक बार घर में बच्चों को कहानी सुनाई जो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने अलहकम अख़बार के लिए लिखवाई और वह यह थी:

“एक गंजा और एक अंधा था। खुदा का फ़रिश्ता रूप बदलकर गंजे के पास आया और उससे पूछा, तू क्या चाहता है? गंजे ने कहा, मेरे सिर के बाल हो जाएँ और माल-दौलत हो जाए। इसलिए फ़रिश्ते ने गंजे के सिर पर हाथ फेरा तो खुदा की कुदरत से उसके सिर पर बाल भी निकल आए और माल-दौलत, नौकर-चाकर भी मिल गए।

फिर अंधे के पास आया और उससे पूछा, तू क्या चाहता है? अंधे ने कहा कि मेरी आँखें रोशन हो जाएँ तो मैं ठोकरें खाता न फिर्कूँ और रुपया-पैसा मिल जाए तो किसी का मोहताज न रहूँ। फ़रिश्ते ने उसकी आँखों पर हाथ फेरा तो वे रोशन हो गईं और माल-दौलत भी मिल गई।

फिर वही फ़रिश्ता खुदा तआला के हुक्म से अंधे और गंजे की परीक्षा लेने के लिए एक फ़क़ीर के रूप में आया और गंजे के पास जाकर सवाल किया। गंजे ने कड़वे चेहरे से, बड़ी बदमिज़ाजी से जवाब दिया और झिड़क दिया और कहा कि चल, तेरे जैसे बहुत फ़क़ीर घूमते हैं। फ़रिश्ते ने उसके सिर पर हाथ फेर दिया और फिर वह गंजे का गंजा ही हो गया और सारा माल-दौलत चला गया और फिर वैसा ही तंगहाल हो गया।

फिर वही फ़रिश्ता फ़क़ीर के रूप में अंधे के पास आया जो अब बहुत धनवान और देखने वाला हो गया था और सवाल किया। उसने कहा कि सब कुछ अल्लाह तआला ने दिया है और उसका माल है, तुम ले लो। इस पर फिर अल्लाह तआला ने अंधे को और भी माल-दौलत दी।”

आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि: “इसलिए ऐ प्यारे बच्चों! तुम भी याद रखो कि खुदा तआला की दी हुई नेमतों का शुक्र करो और उसकी क़द्र करो और सवाल करने वाले को झिड़की न दो। दान करना अच्छी बात है और सवाल करने वाले को देना चाहिए। इससे खुदा खुश होता है और नेमत बढ़ाता है।”

(अलहकम, 13 सितंबर 1898 ई., जिल्द 2, नंबर 26-27, पृष्ठ 11)

यद्यपि यह एक लंबी हदीस भी है जिसमें तीन प्रकार के लोगों का उल्लेख आया है:

(सहीह अल-बुख़ारी, किताब अहादीसुल अबिया, बाब हदीस-ए-अबरस व अमा व अक्रा फ़ी बनी इस्राईल, हदीस 3464)

लेकिन आप अलैहिस्सलाम ने बच्चों के लिए इसे संक्षिप्त करके घर में कहानी के रूप में बताया।

सर्दियों में रमज़ान आने पर एक सुंदर ढंग से शुक्र की भावनाओं का इज़हार फ़रमाया। चुनाँचे हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं:

“मौलवी शेर अली साहब ने मुझे बताया कि एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमा रहे थे कि यह भी खुदा तआला का एक फ़ज़ल है कि उसने हमें ऐसे समय में मामूर किया कि रमज़ान का महीना सर्दियों में आता है और रोज़े अधिक शारीरिक तकलीफ़ का कारण नहीं बनते और हम आसानी से रमज़ान में भी काम कर सकते हैं। मौलवी साहब कहते थे कि उन दिनों में रमज़ान दिसंबर में आया था।”

और वे कहते हैं: “खाकसार निवेदन करता है कि मैंने उस समय की जंती को देखा है।”

यह मेरा ख़याल है कि हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु कह रहे हैं कि मैंने उस समय की जंती देखी है।

“हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मसीह होने का दावा 1891 ई. में किया था और 1891 ई. में रमज़ान का महीना 11 अप्रैल को शुरू हुआ था। यानी यह रमज़ान के महीने के लिए सर्दी के मौसम में प्रवेश करने की शुरुआत थी। चुनाँचे

1892 ई. में रमज़ान के महीने की शुरुआत 31 मार्च को हुई। 1893 ई. में 20 मार्च को हुई और उसके बाद रमज़ान का महीना हर साल अधिक सर्दी के दिनों में आता गया और जब 1908 ई. में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का निधन हुआ तो उस वर्ष रमज़ान के महीने की शुरुआत 1 अक्टूबर को हुई थी।

इस तरह मानो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैसत का पूरा समय ऐसी स्थिति में गुज़रा कि रमज़ान के रोज़े सर्दी के मौसम में आते रहे और यह खुदा तआला का एक फ़ज़ल था जो उसकी सामान्य तकदीर के अधीन हुआ और जिसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की गहरी समझ रखने वाली प्रकृति ने खुदा का एक उपकार समझकर अपने अंदर शुक्रगुजारी की भावनाएँ पैदा कीं।”

(सीरतुल महदी, जिल्द प्रथम, भाग द्वितीय, रिवायत नंबर 419, पृष्ठ 372-373)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बात पर भी शुक्र करते थे कि किसी व्यक्ति के काम से मानवता को लाभ पहुँच रहा है। चुनाँचे मानव जाति से संबंधित नेकियों का उल्लेख करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इलाज के संबंध में हज़रत हकीम मौलाना नूरुद्दीन साहब रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में बयान फ़रमाते हैं:

“यह” यानी इलाज “बहुत लाभ पहुँचाने वाली चीज़ है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इसे बहुत क़द्र की नज़र से देखते थे। एक बार घर में हज़रत मौलवी साहब का ज़िक्र आया तो आप अलैहिस्सलाम उनका नाम लेकर देर तक अल्हम्दुलिल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह कहते रहे और फ़रमाया: मौलवी साहब”

यानी हज़रत हकीम मौलवी नूरुद्दीन साहब रज़ियल्लाहु अन्हु

“भी अल्लाह तआला की नेमतों में से एक नेमत हैं। उनके द्वारा कई ग़रीबों का इलाज हो जाता है।”

इलाज तो दूसरों का होता था लेकिन शुक्र आप अलैहिस्सलाम कर रहे थे कि वे मानवता की सेवा कर रहे हैं और इस पर आप अलैहिस्सलाम शुक्र अदा करते थे कि उनसे इंसानों को लाभ पहुँच रहा है।

(तक्ररीर जलसा सालाना, 27 दिसंबर 1922 ई., अनवारुल उलूम, जिल्द 7, पृष्ठ 35)

यह था आपका मानवता के लिए भी दर्द कि उनकी तकलीफ़ दूर करने वाले का भी आप अलैहिस्सलाम शुक्रिया अदा फ़रमाते थे और अल्लाह तआला का भी शुक्र अदा करते थे कि उसने उनकी तकलीफ़ें दूर करने का प्रबंध किया है।

इंशाअल्लाह और भी बाकी बातें आगे बयान करूँगा। इस समय मैं

कुछ मरहूमों का उल्लेख करना चाहता हूँ और नमाज़ के बाद उनका नमाज़-ए-जनाज़ा गायब भी पढ़ाऊँगा। इसमें पहला उल्लेख है:

हाफ़िज़ शहबाज़ अहमद साहब, मुबल्लिग़ सिलसिला, आइवरी कोस्ट

में थे। जो 18 जुलाई को दिल की धड़कन बंद होने के कारण 31 वर्ष की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे। उनके पीछे रहने वालों में पत्नी और एक बेटी शामिल हैं।

2008 ई. में उन्होंने कुरआन करीम हिफ़ज़ किया। 2019 ई. में जामिआ से शिक्षा पूरी करने के बाद NUML विश्वविद्यालय से फ्रेंच भाषा में एक वर्ष का डिप्लोमा प्राप्त किया। इसके बाद फ्रेंच भाषा में एम.ए. की डिग्री प्राप्त की। इसके बाद उनकी नियुक्ति आइवरी कोस्ट में हुई।

मरहूम बहुत मिलनसार, मेहमाननवाज़, हँसमुख स्वभाव के मालिक, ख़िलाफ़त के फ़िदाई और वक़फ़ की ज़िम्मेदारियाँ अच्छे ढंग से निभाने वाले एक सच्चे सेवक-ए-सिलसिला थे। पिछले कुछ समय से उर्दू और फ़ारसी भाषा में कुरआन करीम नाज़िरा, क़ायदे के साथ, ऑनलाइन पढ़ा रहे थे।

लिखने वाले लिखते हैं कि मरहूम की सबसे प्रमुख विशेषता उनका स्वाभिमान और धैर्य था। कभी किसी पर बोझ नहीं बने। तब्लीग़ का बहुत शौक़ था। कभी-कभी अपने घर पर ही तब्लीगी बैठक रख लेते। शहर के सम्मानित लोगों और प्रशासन से बहुत अच्छे संबंध थे। अपनी जमाअत के लोगों की तरबियत करने के लिए अलग-अलग साधन तलाशते रहते थे। कभी भी अपने और अप्रीकी लोगों के बीच दूरी पैदा नहीं होने दी। अपने क्षेत्र में बड़ी लगन और मेहनत से जमाअती निर्माण कार्य भी करवाए और अच्छे काम करवाए। सस्ते रंग में मस्जिदें भी बनवाईं।

उनकी पत्नी सबीका साहिबा कहती हैं कि वे अच्छे, नेक और बहुत ज़िम्मेदार मुबल्लिग़, पति और पिता थे। एक बात जो हमेशा कहा करते थे कि मेरे लिए दुआ किया करो कि अल्लाह तआला मुझे जमाअत के लिए कोई बहुत बड़ा काम करने की

तौफ़ीक़ दे। मैं जमाअत के लिए कुछ करना चाहता हूँ। उनमें बड़ी तड़प थी। जमाअती माल की बहुत क़द्र करते थे। सहनशीलता उनमें बहुत अधिक थी। कोई परेशानी या दुख होता तो कभी उसे चेहरे पर प्रकट नहीं होने देते थे। गुस्से का नामोनिशान नहीं था। हर समय हँसते-मुस्कुराते रहते। नरमी से बात करते। प्यार से अपनी बात समझाते।

नौमान क़दीर साहब मुबल्लिग़ हैं। कहते हैं हाफ़िज़ साहब समझदारी से मामले को समझने वाले व्यक्ति थे। जमाअती मामले में जब भी उनसे सलाह ली तो बड़ी बुद्धिमत्ता से ऐसी सलाह देते थे कि जो मामला ऊपर से मुश्किल दिखाई देता था वह आसानी से हल हो जाता था। युवावस्था में ही अल्लाह तआला ने उन्हें बड़ी क्षमता दी थी।

इहतिशामुल हक़ साहब मुबल्लिग़ लिखते हैं कि उनका मुबल्लिग़ों के अलावा स्थानीय मुअल्लिमों के साथ और अपने पड़ोसियों तथा जमाअत के मित्रों के साथ भी बहुत गहरा संबंध था, जिसका अक्सर लोगों ने मुलाक़ात के दौरान उल्लेख किया है। कठिनाइयों में दूसरों की छिपकर मदद किया करते थे।

राफ़े तबस्सुम साहब कहते हैं कि मरहूम जमाअत के हर काम को अपनी ज़िम्मेदारी समझते थे और कोई काम सौंपा जाता तो उसे केवल फ़र्ज़ नहीं बल्कि इबादत समझकर अदा करते थे। समय की पाबंदी, योजना बनाना, ज़िम्मेदारी और निष्ठा आपकी शख्सियत के प्रमुख पहलू थे।

मरहूम की एक विशेषता यह भी थी कि वे हमेशा जमाअत की शिक्षा और तरबियत के लिए नए-नए तरीके सोचते रहते थे। आप युवाओं, बच्चों और बड़ों सभी की तरबियत की चिंता रखते थे और यह बहुत आवश्यक बात है जो एक मुरब्बी में होनी चाहिए।

इसी तरह मरहूम की एक प्रमुख विशेषता यह भी थी कि आपमें निष्ठा बहुत थी और निःस्वार्थ होकर सेवा करते थे। कभी इसका प्रदर्शन नहीं करते थे। प्रसिद्धि के इच्छुक नहीं थे बल्कि अल्लाह तआला की प्रसन्नता चाहते थे। जहाँ भी नियुक्त किए गए हमेशा धर्म की सेवा में व्यस्त रहे। बच्चों को कुरआन करीम सही उच्चारण के साथ पढ़ाते और बड़ी मुहब्बत से पढ़ाते और बहुत से बच्चे उनके शिष्य हैं जो उन्हें याद करते हैं।

दूसरा उल्लेख है: यीलिंगा मोमिनी (Yilyinga Moumini) साहब।

ये बुर्किना फ़ासो के हैं। वहाँ एक स्थान के ज़ईम अंसारुल्लाह थे। जुलाई के महीने की बात है, खेतों में काम कर रहे थे कि इस दौरान आतंकवादियों ने गोलीबारी का निशाना बनाकर उन्हें शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। 1989 ई. में उन्होंने बैअत की थी।

वदूद साहब मुबल्लिग़ लिखते हैं कि शहीद मरहूम जमाअत और ख़िलाफ़त से गहरी मुहब्बत रखने वाले बहुत सच्चे इंसान थे। उनमें कुरआन करीम से प्रेम, मस्जिद से गहरा संबंध, इबादत, ख़िलाफ़त की आज्ञापालन और जमाअती सेवा का विशेष जज़्बा था।

इसी तरह अब्दुल्लाह जंगानी साहब मुअल्लिम हैं, बयान करते हैं कि वे बहुत बहादुर, निडर, सच्चे, तक्रवा वाले, इबादत करने वाले, अच्छे आचरण वाले, मिलनसार, कम बोलने वाले और ख़िलाफ़त से मुहब्बत और आज्ञापालन करने वाले बेहतरीन कार्यकर्ता थे। अक्सर मस्जिद में सबसे पहले पहुँचते और बैठकर कुरआन करीम की तिलावत करते रहते थे।

इसी तरह मुअल्लिम साहब बयान करते हैं कि फ़ज़्र के समय उनके घर के सामने से जब मैं गुज़रता तो उनके घर से तिलावत की आवाज़ आती थी। अब्दुर्रहमान साहब, जो इस स्थान के क्षेत्रीय अध्यक्ष हैं, कहते हैं कि जमाअती रूप से जब भी वक़ार-ए-अमल होता तो उम्र में बड़े होने के बावजूद जब भी मैंने उन्हें कहा, वे स्वयं भी आते और अपने बच्चों को भी साथ लेकर आते और हर जलसा और इज्तिमा में ज़रूर शामिल होते। तबीयत ख़राब भी होती तब भी जमाअती कार्यक्रमों में शामिल होते।

अमीन बलोच साहब कहते हैं कि मैं भी इस क्षेत्र में रहा हूँ। चंदे में बहुत नियमित थे। इसी तरह श्रीमान बालबोने साहब स्थानीय मुअल्लिम हैं। वे कहते हैं कि शहादत से एक दिन पहले भी अपने चंदे के बारे में संपर्क किया और उसकी अदायगी की चिंता व्यक्त की और वे जमाअत की सेवा के जज़्बे से भरपूर थे। और यही विशेषताएँ हर लिखने वाले ने उनके बारे में लिखी हैं।

उनके पीछे रहने वालों में दो विधवाएँ और 13 बेटे-बेटियाँ शामिल हैं। अल्लाह

तआला उनसे मगफ़िरत और रहमत का व्यवहार फ़रमाए।

तीसरा उल्लेख है: श्रीमान याह्या सोमारे (Soumare) साहब।

ये माली के हैं। ये भी पिछले दिनों 32 वर्ष की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। ये भी शहीद ही हैं। माली में आतंकवाद के कारण कुछ समय से हालात खराब हैं।

याह्या सोमारे साहब गॉ-रीजन के क्षेत्र एनीफ़िस (Anefis) में सैन्य ड्यूटी पर नियुक्त थे। ये सेना में थे। और 4 जुलाई को कहते हैं कि मौसम खराब था, तेज़ हवा चल रही थी। उन्होंने इस अवसर पर अपने वरिष्ठ अधिकारी से कहा कि मैं ज़रा ड्यूटी पर तैनात सैनिक दस्ते की ख़ैरियत मालूम कर आऊँ और आतंकवादियों के ख़िलाफ़ ग़श्त पर नियुक्त दस्ते को देखने के लिए जब बाहर निकले तो इस दौरान आतंकवादियों ने हमला कर दिया और इसी दौरान याह्या साहब शहीद हो गए।

उनके बारे में और लिखा है कि 22 सितंबर को माली के स्वतंत्रता दिवस के दिन सेना में उनके पद में तरक्की भी होनी थी और उन्हें मेडल ऑफ़ ऑनर भी मिलना था। सेना की ओर से यह निर्णय हुआ था। इसी तरह उनकी नियुक्ति भी बड़े शहर में होनी थी लेकिन इससे पहले ही उन्होंने जाम-ए-शहादत पी लिया।

उनके भाई फ़ोदी सोमारे कहते हैं कि याह्या सोमारे ने 2022 ई. में जलसा सालाना में भाग लिया। जलसे के दौरान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर देखते ही उनके दिल पर एक विशेष अवस्था पैदा हुई और अजीब सुकून और संतोष महसूस हुआ। जलसे के दौरान तक़रीरें सुनने और जमाअती साहित्य, विशेष रूप से “इस्लामी उसूल की फ़िलॉसफ़ी” के स्थानीय भाषा में अनुवाद के अध्ययन से उनके विश्वास में और वृद्धि हुई। विशेष रूप से जिहाद के संबंध में जमाअत अहमदिया के तर्कसंगत और इस्लामी सिद्धांतों के अनुसार दृष्टिकोण ने उनके दिल पर गहरा प्रभाव डाला और इसी जलसा सालाना के मुबारक अवसर पर उन्होंने बैअत करके जमाअत में शामिल होने का निर्णय लिया।

उनकी पत्नी कहती हैं कि वे एक आदर्श पति, अपने बच्चे के लिए बहुत स्नेही पिता और हमारी आवश्यकताओं का ध्यान रखने वाले थे। हर कठिन समय में हमारे लिए मज़बूत सहारा बनते थे। उनके माता-पिता कहते हैं कि हमारे साथ उनका अत्यंत प्रेम और सम्मान का संबंध था। नियमित रूप से फ़ोन करके हमारी ख़ैरियत पूछते थे। हमारी आवश्यकताओं का ध्यान रखते थे और हमारी हर तकलीफ़ दूर करने की कोशिश करते थे। बहुत आज्ञाकारी बेटे थे।

मिशनरी इंचार्ज साहब माली लिखते हैं कि वे हँसमुख और खुशमिज़ाज व्यक्तित्व वाले युवक थे। रोज़ा और नमाज़ के पाबंद, ज़रूरतमंद लोगों का ध्यान रखने वाले, अपने और गैर दोनों के लिए अच्छा नमूना अपनाने वाले, पारिवारिक रिश्तों को अच्छी तरह निभाने वाले, नेक और सच्चे इंसान थे।

नव-मुबायिअ होने के बावजूद मरहूम को जमाअत अहमदिया, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और खुलफ़ा-ए-किराम से अत्यंत निष्ठा, गहरी संबद्धता, श्रद्धा और सच्ची मुहब्बत का संबंध था।

आपके पिता साहब अहमदी नहीं थे लेकिन बेटे की शहादत के बाद उन्होंने देखा कि जमाअत का जो अच्छा व्यवहार है और जमाअत ने जिस तरह सब कुछ संभाला है, यह सहानुभूति देखकर वे प्रभावित हुए और वे पहले से ही धर्म की जाँच कर रहे थे। कहते हैं कि अहमदियत की सच्चाई अब मुझ पर स्पष्ट हो गई है। इसलिए उन्होंने बैअत करने का निर्णय किया है।

इसी तरह अगला उल्लेख श्रीमान सिराजुल हक़ कुरैशी साहब

का है। ये नायब अफ़सर जलसा सालाना रब्बा थे। ये भी पिछले दिनों 86 वर्ष की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे।

उनके परिवार में अहमदियत उनके दादा हज़रत मियाँ कुतुबुद्दीन साहब रज़ियल्लाहु अन्हु, सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, के माध्यम से आई। उन्हें सपना आया था कि मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आ चुके हैं। इसलिए वे क़ादियान गए और हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम के हाथ पर बैअत की। उनकी दादी भी सहाबिया थीं।

अल्लाह तआला ने उनके दादा को दो बेटों कुरैशी फ़ज़ल हक़ और कुरैशी अब्दुल ग़ानी साहब से नवाज़ा और ये दोनों बेटे धर्म की बड़ी सेवा करने वाले थे और व्यापार करने के बावजूद हर समय धर्म की सेवा के लिए तैयार रहते थे और रब्बा की आबादी बसाने में भी उनका बहुत हिस्सा है। विशेष रूप से जब पानी तलाश करने का

सिलसिला शुरू हुआ तो उस समय भी नल आदि लगाने का काम उनके सुपुर्द था।

कुरैशी सिराजुल हक़ साहब के नाना मौलवी मुहम्मद उस्मान साहब रज़ियल्लाहु अन्हु भी सहाबी थे। आजकल ये नायब नाज़िर और नायब अफ़सर जलसा सालाना के रूप में सेवा कर रहे थे। नियमित जमाअती सेवा उन्होंने कुछ वर्ष पहले, लगभग 15-20 वर्ष पहले शुरू की थी। इससे पहले आप शिक्षा विभाग में विभिन्न कॉलेजों में अध्यापन की सेवाएँ करते रहे। टी.आई. कॉलेज रब्बा में भी उन्होंने पढ़ाया।

सैयद क़ासिम अहमद साहब कहते हैं कि सिराजुल हक़ कुरैशी साहब की वफ़ात से कार्यालय जलसा सालाना के सभी कार्यकर्ता ऐसा महसूस करते हैं जैसे उनका बहुत हमदर्द और दुख-सुख का साथी और बुजुर्ग उनसे अलग हो गया है। जब भी उनके सुपुर्द कोई काम किया जाता, बहुत ज़िम्मेदारी से पूरा करते।

उनके पीछे रहने वालों में दो बेटियाँ और दो बेटे शामिल हैं। एक बेटे क़मरुल हक़ कुरैशी साहब सिलसिला के मुरब्बी हैं और इतिहास विभाग में सेवा कर रहे हैं। अल्लाह तआला उनसे मगफ़िरत और रहमत का व्यवहार फ़रमाए।

अगला उल्लेख है: श्रीमान लॉवल तैयब (Lawal Toyeeb) साहब, मुअल्लिम सिलसिला, नाइजीरिया।

ये भी पिछले दिनों 30 वर्ष की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे। जलसा सालाना के दिनों में लाइव प्रसारण की तैयारी के दौरान आप मस्जिद की सैटेलाइट डिश की मरम्मत करते हुए सीढ़ी से गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए। इलाज के बावजूद जानवर न हो सके। उनकी रीढ़ की हड्डी पर बहुत गंभीर चोट आई थी। पीछे रहने वालों में माता-पिता और पत्नी के अलावा लगभग 11 महीने की एक बेटी शामिल है।

2018 ई. में जामिआतुल मुबश्शरीन नाइजीरिया से शिक्षा पूरी की और मुअल्लिम के रूप में उनकी नियुक्ति हुई। बहुत विनम्र, सक्रिय और सच्चे मुअल्लिम थे। जमाअत की ओर से दी जाने वाली हर ज़िम्मेदारी अपनी क्षमता के अनुसार बहुत अच्छे ढंग, मेहनत और निष्ठा के साथ बेहतरीन तरीके से पूरी करते थे।

उनके माता-पिता कहते हैं कि वे बहुत ज़िम्मेदार, माता-पिता का बहुत ध्यान रखने वाले और सेवा करने वाले बेटे थे। सीमित आर्थिक साधनों के बावजूद हमेशा अपनी पूरी क्षमता के अनुसार अपने माता-पिता की आर्थिक आवश्यकताएँ पूरी करने की कोशिश करते।

उनकी पत्नी कहती हैं कि जमाअती ज़िम्मेदारियाँ निभाने के साथ-साथ इस्लामी शिक्षाओं और ख़िलाफ़त अहमदिया के निर्देशों पर व्यावहारिक रूप से चलते थे। अपने अच्छे आचरण, निष्ठा और स्नेह के कारण जमाअत के लोगों और दूसरे मुसलमानों तथा गैर-मुसलमानों सभी में समान रूप से प्रिय थे।

एक मुअल्लिम मुनव्वर साहब हैं। वे भी यही बताते हैं कि बहुत अच्छे आचरण वाले थे। बहुत धैर्य और हौसला था। दूसरों का हौसला बढ़ाया करते थे और विद्यार्थी जीवन से ही जमाअत की सेवा का उन्हें बहुत शौक था।

बिस्तर-ए-इलाज पर भी, जबकि वे बहुत बीमार थे, चोट लगी हुई थी और तकलीफ़ में थे, लेकिन जमाअती मामलों और जमाअत के लोगों की तरबियत के बारे में पूछते रहते थे। अल्लाह तआला उनसे मगफ़िरत और रहमत का व्यवहार फ़रमाए।

अगला जनाज़ा है: श्रीमान रिटायर्ड मास्टर ग़फ़ूर अहमद साहब

जो आजकल कनाडा में थे। सांगला हिल के एक गाँव में ये सदर भी रह चुके हैं। उनकी भी पिछले दिनों वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

पाँचों समय के नमाज़ी, तहज़ुद पढ़ने वाले, ख़ुदा से डरने वाले, मिलनसार और ख़िलाफ़त के प्रेमी, हमेशा निज़ाम-ए-जमाअत और ख़िलाफ़त की आज्ञापालन करने वाले व्यक्ति थे। ग़ैरों की आवश्यकताओं का भी ध्यान रखते। कुछ लोगों की छिपकर आर्थिक सहायता करते। जमाअती चंदों और अन्य आर्थिक तहरीकों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते। नियमित रूप से खुल्बे सुनते और दूसरों को भी इसकी नसीहत करते। जमाअती कार्यकर्ताओं और वाकिफ़ीन-ए-ज़िंदगी का बहुत सम्मान किया करते थे।

उनके पीछे रहने वालों में पत्नी के अलावा तीन बेटियाँ और पाँच बेटे शामिल हैं। इसी तरह नाती-नातिन और पोते-पोतियाँ हैं। उनके एक बेटे नईम इक़बाल साहब फ़िजी के अमीर और मिशनरी इंचार्ज हैं, जो पिता साहब की वफ़ात के समय मैदान-ए-अमल में होने के कारण जनाज़े में शामिल नहीं हो सके। अल्लाह तआला उन्हें भी सब्र और हौसला प्रदान करे और मरहूम से मगफ़िरत और रहमत का व्यवहार फ़रमाए।



पृष्ठ 03 का शेष

और हम अहमदी हैं और हमारे वर्तमान इमाम मिर्जा मसरूर अहमद साहब हैं।

इस पर उस्मान साहब ने बताया कि मुझे सपने में यह नाम मसरूर अहमद सुनाया गया था। मुझे आवाज़ आई कि मसरूर अहमद की आज्ञा का पालन करो और उनके साथ हो जाओ। मैं बहुत हैरान हुआ कि यह कौन हैं। आज जब मैंने अपने बच्चे से यह नाम सुना तो मैं आपके पास आया हूँ।

इसके बाद उस्मान साहब ने मुअल्लिम अबूबकर से संपर्क रखा, सवाल-जवाब हुए, किताबों का भी अध्ययन किया और संतुष्ट होने के बाद बैअत कर ली।

अहमदियों के अच्छे नमूने से तब्लीग

मायोट आइलैंड के मुबल्लिग लिखते हैं कि एक महिला काफी समय से तब्लीग के संपर्क में थीं, लेकिन अहमदियत स्वीकार करने में हिचकिचा रही थीं। हमारे सदस्य धैर्य और सच्चे भाव के साथ अपनी कोशिशें जारी रखे हुए थे।

हमने उन्हें अपने एक जलसे में शामिल होने का निमंत्रण दिया तो पहले उन्होंने निमंत्रण स्वीकार नहीं किया, लेकिन बाद में जलसे में शामिल हुईं। जलसे में भाईचारे का माहौल, जमाअत की प्रेमपूर्ण आत्मीयता और वक्ताओं के भाषणों से वे बहुत प्रभावित हुईं। अगले ही दिन उन्होंने हमसे संपर्क किया और बैअत करके इस्लाम-अहमदियत में शामिल हो गईं।

विरोधियों का अहमदियत स्वीकार करना

कांगो किंशासा से स्थानीय मुबल्लिग कहते हैं कि एक सुन्नी इमाम ने उन्हें फ़ोन किया कि रेडियो पर आपके मसीह के आने के बारे में बातचीत सुनी, जिसमें आपने मिर्जा गुलाम अहमद अलैहिस्सलाम को इस ज़माने का मसीह बताया और इस बात ने मेरे दिल में बेचैनी पैदा कर दी है। मैं इस समय बीमार हूँ, आप मेरे पास आएं, ऐसा न हो कि मैं संदेह और शंकाओं के साथ ही मृत्यु को प्राप्त हो जाऊँ।

स्थानीय मुबल्लिग साहब उनके पास गए। बातचीत हुई तो उन्होंने जमाअत का संदेश स्वीकार कर लिया और कहा कि आज से वह इस संदेश को अपने अनुयायियों तक भी पहुँचाएँगे। और आगे कहा कि मैं अल्लाह तआला से उस विरोध की माफ़ी चाहता हूँ जो इससे पहले हज़रत मिर्जा गुलाम अहमद अलैहिस्सलाम के बारे में करता रहा।

अहमदियों का अच्छा व्यवहार

सदर जमाअत ज़िम्बाब्वे लिखते हैं कि यहाँ एक दोस्त ने बैअत की। अहमदियत स्वीकार करने से पहले वह नशीली चीज़ों का इस्तेमाल करते थे। इन हालात में भी, नशीली चीज़ें लेने के बावजूद हमारे दो सदस्य उनसे संपर्क में थे और उन्हें जमाअत के कार्यक्रम में बुलाते थे और कभी जुमे की नमाज़ के लिए भी लाते थे।

बैअत करने के बाद उन्होंने कहा कि जिस चीज़ ने मुझे अहमदी बनाया है, वह अहमदियों का अच्छा व्यवहार है।

जुमे की नमाज़ की अदायगी

सेंट्रल अफ़्रीका से एक नौ-मुबाइअ कहते हैं कि मैं अपने दोस्त के साथ जुमे की नमाज़ अदा करने जा रहा था कि एक मस्जिद के पास से गुज़रा। मैंने अपने दोस्त से कहा कि यही नज़दीक की मस्जिद है। हम यहाँ से गुज़र रहे हैं, यहीं जुमे की नमाज़ अदा कर लेते हैं।

मेरे दोस्त ने कहा कि नहीं, यह अहमदियों की मस्जिद है। उनका इस्लाम अलग है, जबकि हमारा अलग है। लेकिन मेरे दिल में उसकी बात खटक गई और मेरे अंदर जिज्ञासा पैदा हो गई कि यह कैसे संभव है कि इस्लाम अलग-अलग हो?

इसलिए अगले शुक्रवार मैंने अहमदियों की मस्जिद में नमाज़ पढ़ने का इरादा किया। मस्जिद में दाख़िल हुआ तो क्या देखता हूँ कि वही अज़ान है, वही नमाज़ है और इसके अलावा यहाँ ख़ुल्बा भी आसान अंदाज़ में था। इसलिए मैंने बैअत करके जमाअत अहमदिया में प्रवेश कर लिया और अल्लाह के फ़ज़ल से अब मैं बहुत पाबंदी से नमाज़ पढ़ने वाला हूँ।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आख़िर में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक उद्घरण पढ़ता हूँ।

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

“बाज़ आ जाओ और इस क़हर से डरो और यक़ीनन समझो कि तुम अपनी बिगाड़ पैदा करने वाली हरकतों पर मुहर लगा चुके हो। अगर ख़ुदा तुम्हारे साथ होता तो इतने धोखों की तुम्हें कुछ भी ज़रूरत न होती। तुममें से केवल एक व्यक्ति की दुआ ही मुझे नष्ट कर देती, मगर तुममें से किसी की दुआ भी आसमान पर न चढ़ सकी। बल्कि दुआओं का असर यह हुआ कि दिन-ब-दिन तुम्हारा ही अंत होता जाता है। क्या तुम देखते नहीं कि तुम घटते जाते हो और हम बढ़ते जाते हैं? अगर तुम्हारा क़दम किसी सच्चाई पर होता तो क्या इस मुकाबले में तुम्हारा अंजाम ऐसा होता?”

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

“ऐ नादान क्रौम! यह सिलसिला आसमान से स्थापित हुआ है। तुम ख़ुदा से मत लड़ो। तुम इसे नष्ट नहीं कर सकते। इसका हमेशा बोलबाला है। अपने नफ़्सों पर जुल्म मत करो और इस सिलसिले को बे-क़द्री से न देखो, जो ख़ुदा की ओर से तुम्हारी सुधार के लिए पैदा हुआ है। और यक़ीनन समझो कि अगर यह काम इंसान का होता और कोई छिपा हुआ हाथ इसके साथ न होता तो यह सिलसिला कब का नष्ट हो जाता और ऐसा झूठा दावा करने वाला इतनी जल्दी हलाक हो जाता कि अब उसकी हड्डियों का भी पता न मिलता। इसलिए अपने विरोध के काम पर फिर से विचार करो। कम से कम यह तो सोचो कि शायद गलती हो गई हो और शायद यह लड़ाई तुम्हारी ख़ुदा से हो।”

ख़ुदा करे कि दुनिया और विशेष रूप से मुस्लिम दुनिया इस संदेश को समझे और उस हाथ पर इकट्ठी हो जाए जिसे अल्लाह तआला ने इस ज़माने में मुसलमानों को एकता की डोर में पिरोने के लिए भेजा है, जिसे अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की गुलामी में लाने के लिए भेजा है, सच्ची गुलामी में लाने के लिए भेजा है।

अल्लाह तआला हमें भी अपनी ज़िम्मेदारियाँ पूरी करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे।

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह।



प्रिय पाठकगण अवश्य ध्यान दें अखबार बदर की सहायता

अखबार बदर को यह सम्मान प्राप्त है कि यह अखबार पूर्ण रूप से इस युग के मामूर, हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सच्चे सेवक, हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बरकत वाली सहायता में पनपा। शुरुआत से आज तक, पहले नबुव्वत और बाद में खिलाफत अला मिन्हाजे नबुव्वत के संरक्षण में यह अखबार प्रचार और प्रशिक्षण के कर्तव्यों को पूरा करता चला आ रहा है। कई नेक लोगों ने इस अखबार के माध्यम से अहमदियत को स्वीकार किया। इस अखबार के माध्यम से खिलाफत-ए-अहमदिया के निर्देशों की रोशनी में अहमदी घरों का प्रशिक्षण हो रहा है और आगे भी इशाअल्लाह होता चला जाएगा।

अखबार की तैयारी, प्रकाशन, पैकिंग और भेजने में बहुत अधिक खर्च होते हैं। केवल मामूली सदस्यता शुल्क से इन खर्चों को पूरा करना संभव नहीं है। इसके लिए खास सहायकों की बहुत आवश्यकता है, जो इस युग के मामूर के इस अखबार के खर्चों को उठाने वाले हों।

इस अखबार की सहायता करने वालों को अल्लाह कभी व्यर्थ नहीं जाने देगा, क्योंकि अल्लाह का वादा है कि:

إِنِّي مُعَيِّنٌ مِّنْ أَرَادَ إِعَانَتَكَ

(अर्थात् मैं उसकी सहायता करूँगा जो तुम्हारी सहायता करेंगे।)

सहायता करने वालों के सभी मामलों का अल्लाह स्वयं संरक्षक हो जाएगा और अपने वादे के अनुसार उनके कारोबार, नौकरी, बाग, फसल और धन में कई गुना वृद्धि करेगा। इशाअल्लाह।

किसी भी प्रकार के मार्गदर्शन के लिए कार्यालय मैनेजर, साप्ताहिक अखबार बदर से संपर्क करें।

संपर्क नंबर: 98156-39670





हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पवित्र जीवन (हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद^{रज़ि} जमाअत अहमदिया के द्वितीय खलीफ़ा)

उहद के युद्धोपरान्त काफ़िर कबीलों के जघन्य षड्यंत्र

उहद की घटना ऐसी न थी जिसे आसानी से भुलाया जा सकता। मक्का वालों ने विचार किया था कि यह उन की इस्लाम के विरुद्ध प्रथम विजय है। उन्होंने यह समाचार समस्त अरब में प्रसारित किया तथा अरब कबीलों को इस्लाम के विरुद्ध भड़काने तथा यह विश्वास दिलाने का माध्यम बनाया कि मुसलमान अजेय नहीं हैं और यदि वे उन्नति करते रहे हैं तो उसका कारण उनकी शक्ति नहीं थी अपितु अरब के कबीलों की लापरवाही थी। अरब यदि संयुक्त प्रयास करें तो मुसलमानों पर विजय प्राप्त करना कोई कठिन कार्य नहीं। इस प्रोपेगन्डा का परिणाम यह हुआ कि मुसलमानों के प्रति विरोध को बहुत बल मिला तथा अन्य कबीलों ने मुसलमानों को कष्ट पहुँचाने में मक्का वालों से भी बढ़कर भाग लेना आरम्भ किया। कुछ ने प्रत्यक्ष रूप से आक्रमण आरम्भ कर दिए और कुछ ने अप्रत्यक्ष रूप से उन्हें हानि पहुँचाना प्रारम्भ कर दिया। हिजरत के चौथे वर्ष अरब के दो कबीले 'अज़ल' और 'क्रारह' ने अपने प्रतिनिधि मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के पास भेजकर सन्देश दिया कि हमारे कबीलों में बहुत से लोग इस्लाम की ओर झुकाव रखते हैं और अनुरोध किया कि कुछ व्यक्ति जो इस्लामी शिक्षा में पारंगत हों भेज दिए जाएं ताकि वे उनके मध्य रह कर उन्हें इस नए धर्म की शिक्षा दें। वास्तव में यह एक षड्यंत्र था जो इस्लाम के कट्टर शत्रु बनू लहयान ने रचा था। उनका उद्देश्य यह था कि जब ये प्रतिनिधि मुसलमानों को लेकर आए तो वे उनका वध करके अपनी ओर से सुफ़यान बिन ख़ालिद का प्रतिशोध लेंगे। अतः उन्होंने अज़ल और क्रारह के प्रतिनिधि कुछ मुसलमानों को अपने साथ लाने के उद्देश्य से पुरस्कार के बड़े-बड़े वादे देकर मुहम्मद (स.अ.व.) की सेवा में भेजे थे। जब 'अज़ल' और 'क्रारह' के लोगों ने मुहम्मद रसूलुल्लाह के पास पहुँच कर निवेदन किया तो आप^स ने उनकी बात पर विश्वास करके दस मुसलमानों को उनके साथ भेज दिया कि उन लोगों को इस्लाम की आस्थाओं और सिद्धान्तों की शिक्षा दें। जब यह दल बनू लहयान के क्षेत्र में पहुँचा तो अज़ल और क्रारह के लोगों ने बनू लहयान को सूचना पहुँचा दी और उन्हें सन्देश दिया कि या तो मुसलमानों को बन्दी बना लें या मौत के घाट उतार दें। इस घिनौने षड्यंत्र के अन्तर्गत बनू लहयान के दो सौ सशस्त्र लोग मुसलमानों का पीछा करने के लिए निकल खड़े हुए तथा 'रजीह' के स्थान में आकर उन्हें घेर लिया। दस मुसलमानों और दो सौ शत्रुओं के मध्य युद्ध हुआ। मुसलमानों के हृदय ईमान के प्रकाश से परिपूर्ण थे और शत्रु इस ईमान से खाली थे। दस मुसलमान एक टीले पर चढ़ गए और दो सौ लोगों को मुकाबले के लिए ललकारा। शत्रु ने धोखा देकर उन्हें बन्दी बनाना चाहा कि यदि तुम नीचे उतर आओ तो तुम से कुछ न कहा जाएगा, परन्तु मुसलमानों के अमीर ने कहा कि हम काफ़िरों के वादों और वचनों को भली-भाँति देख चुके हैं। तत्पश्चात् उन्होंने आकाश की ओर मुख उठा कर कहा हे ख़ुदा! तू हमारी परिस्थिति को देख रहा है, अपने रसूल को हमारी इस परिस्थिति की सूचना पहुँचा दे। जब काफ़िरों ने देखा कि मुसलमानों की इस छोटी सी जमाअत पर उनकी बातों का कोई प्रभाव नहीं होता तो उन्होंने उन पर आक्रमण कर दिया और मुसलमान निर्भयतापूर्वक उन से लड़ते रहे यहाँ तक कि दस में से सात शहीद हो गए, शेष तीन जो बच गए थे उन्हें काफ़िरों ने पुनः वादा दिया कि हम तुम्हारे प्राण बचा लेंगे इस शर्त पर कि तुम टीले से नीचे उतर आओ, परन्तु जब वे काफ़िरों के वादे वर विश्वास करके नीचे उतर आए तो काफ़िरों ने उन्हें अपने धनुषों की प्रत्यंचाओं से जकड़ कर बांध लिया। इस पर उनमें से एक ने कहा कि यह पहली अवज्ञा है जो तुम अपने समझौते के बारे में कर रहे हो। अल्लाह ही जानता है कि तुम इसके पश्चात् क्या करोगे। यह कह कर उसने उन के साथ जाने से इन्कार कर दिया। काफ़िरों ने उसे मारना और घसीटना आरम्भ कर दिया, परन्तु अन्ततः उसके मुकाबले और उसके साहस से इतने निराश हो गए कि उन्होंने उसका वहीं वध कर दिया। शेष दो को वे साथ ले गए तथा उन्हें मक्का के कुरैश के हाथ दास के रूप में बेच दिया, उनमें से एक का नाम ख़ुबैब^{रज़ि} था और दूसरे का नाम ज़ैद। ख़ुबैब का ख़रीदार अपने बाप का बदला लेने के लिए जिसका ख़ुबैब ने बदर के युद्ध में वध किया था ख़ुबैब^{रज़ि} का वध करना चाहता था। एक दिन ख़ुबैब^{रज़ि} ने अपनी आवश्यकता हेतु उस्तरा मांगा, उस्तरा ख़ुबैब^{रज़ि} के हाथ में था कि घर वालों का एक बच्चा खेलता हुआ उसके पास चला गया। ख़ुबैब ने उसे उठा कर अपनी जाँघ पर बैठा लिया। बच्चे की माँ ने जब यह दृश्य देखा तो भयभीत हो गई और उसे विश्वास हो गया कि अब ख़ुबैब बच्चे का वध कर देगा क्योंकि वे कुछ दिनों में ख़ुबैब का वध करने वाले

थे। उस समय उस्तरा उसके हाथ में था और बच्चा उसके इतना निकट था कि वह उसे हानि पहुँचा सकता था। ख़ुबैब^{रज़ि} ने उस बच्चे की माँ के चेहरे से उसकी व्याकुलता को भांप लिया और कहा कि तुम सोचती हो कि मैं तुम्हारे बच्चे का वध कर दूंगा। यह विचार हृदय में कदापि न लाओ, मैं ऐसा कुकृत्य कभी नहीं कर सकता, मुसलमान धोखेबाज़ नहीं होते। वह महिला ख़ुबैब^{रज़ि} की इस ईमानदारी और उचित बात से बहुत प्रभावित हुई। उसने इस बात को सदैव स्मरण रखा और हमेशा कहा करती थी कि हम ने ख़ुबैब^{रज़ि} सा कैदी कोई नहीं देखा।

अन्त में मक्का वाले ख़ुबैब^{रज़ि} को एक खुले मैदान में ले गए ताकि उस का वध करके हर्षोल्लास का उत्सव मनाएं। जब उनके वध का समय आ पहुँचा तो ख़ुबैब^{रज़ि} ने कहा मुझे दो रकअत नमाज़ पढ़ लेने दो। कुरैश ने यह बात स्वीकार कर ली और ख़ुबैब ने सब लोगों के सामने इस संसार में अन्तिम बार अपने अल्लाह की उपासना की। जब वह नमाज़ समाप्त कर चुके तो उन्होंने कहा मैं अपनी नमाज़ जारी रखना चाहता था परन्तु इस विचार से समाप्त कर दी कि कहीं तुम यह न समझो कि मैं मरने से डरता हूँ फिर आराम से अपना सर वध करने वाले के सामने रख दिया और ऐसा करते हुए ये शेर पड़े

وَلَسْتُ أَبَالِي حِينَ أَقْتُلُ مُسْلِمًا
عَلَّ أَىْ جَنْبٍ كَانَ لِلَّهِ مَضْرَعِي
وَذَلِكَ فِي ذَاتِ الْإِلَهِ وَإِنْ يَشَاءُ
يُبَارِكْ عَلَى أَوْصَالِ شِلْوٍ مَمْرَعِ

अर्थात् जब कि मुसलमान होने की अवस्था में मेरा वध किया जा रहा है तो मुझे परवाह नहीं है कि मेरा वध हो कर मैं किस पहलू पर गिरूँ। यह सब कुछ ख़ुदा के लिए है और यदि मेरा ख़ुदा चाहेगा तो मेरे शरीर के कटे हुए भागों पर बरकत उतारेगा।

ख़ुबैब ने अभी ये शेर समाप्त न किए थे कि जल्लाद की तलवार उनकी गर्दन पर पड़ी और उन का सर धरती पर आ गिरा। जो लोग यह उत्सव मनाने के लिए एकत्र हुए थे उन में से एक व्यक्ति सईद बिन आमिर भी था जो बाद में मुसलमान हो गया। कहते हैं जब कभी ख़ुबैब^{रज़ि} के वध की चर्चा सईद के सामने होती तो वह बेहोश हो जाया करता था।

दूसरा कैदी ज़ैद भी वध करने के लिए बाहर ले जाया गया। इस तमाशे को देखने वालों में मक्का का सरदार अबू सुफ़यान भी था। वह ज़ैद से सम्बोधित हुआ और पूछा कि क्या तुम पसन्द नहीं करते कि तुम्हारे स्थान पर मुहम्मद^स हो और तुम अपने घर में आराम से बैठे हो। ज़ैद ने बड़े क्रोध की मुद्रा में उत्तर दिया अबू सुफ़यान! तुम क्या कहते हो ख़ुदा की क़सम मेरे लिए मरना इस से उत्तम है कि मुहम्मद (स.अ.व.) के पैर में मदीना की गलियों में एक कांटा भी चुभ जाए^२। श्रद्धासिक्त त्याग की इस संभावना को देखकर अबू सुफ़यान प्रभावित हुए बिना न रह सका और उसने आश्चर्यपूर्वक ज़ैद की ओर देखा और तुरन्त ही दबे शब्दों में कहा कि ख़ुदा गवाह है कि जिस प्रकार मुहम्मद (स.अ.व.) के साथ मुहम्मद (स.अ.व.) के साथी प्रेम करते हैं मैंने नहीं देखा कि इस तरह कोई अन्य व्यक्ति किसी से प्रेम करता है।

कुर्आन के सत्तर हाफ़िज़ों (कंठस्थ कर्ताओं) के वध की नृशंस घटना^१

लगभग इन्हीं दिनों के आस-पास नजद के कुछ लोग मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के पास आए ताकि उनके साथ कुछ मुसलमान भेज दिए जाएं जो उन्हें इस्लाम की शिक्षा दें। आप^स ने उनका विश्वास न किया परन्तु अबूबरा ने जो उस समय मदीना में थे कहा कि मैं इस कबीले की ओर से उत्तरदायी बनता हूँ और मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को विश्वास दिलाया कि वे कोई उपद्रव नहीं करेंगे। इस पर आप (स.अ.व.) ने सत्तर मुसलमानों को जो कुर्आन के हाफ़िज़ (कंठस्थ करने वाले) थे इस कार्य के लिए चुना। जब यह दल 'बेर-ए-मऊना' पर पहुँचा तो उनमें से एक व्यक्ति हराम बिन मल्हान^{रज़ि} आमिर कबीले के सरदार के पास गया जो 'अबू बरा' का भतीजा था ताकि उसे इस्लाम का सन्देश दे। प्रत्यक्ष तौर पर कबीले वालों ने 'हराम' का भली प्रकार स्वागत किया परन्तु जिस समय वह सरदार के सामने भाषण दे रहे थे तो एक व्यक्ति छुप कर पीछे से आया और उन पर भाले से प्रहार किया। हराम का वहीं अन्त हो गया। जब बर्छा उनके गले से पार हुआ तो वह कहते हुए सुने गए कि اَللّهُ اَكْبَرُ فَرْثُ اَلْكَعْبَةِ अर्थात् अल्लाहो अकबर। का'बे के रब की क़सम मैं अपनी मनोकामना को पहुँच गया।

शेष ..

Editor: Shaikh Mujahid Ahmad
Dy. Editor: Syed Mohiuddin Farid
Editor : +91-9915379255
 akhbaarbadaarhindi@qdn@gmail.com
 www.akhbarbadaar.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553

Weekly BADAR Qadian
 Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA

POSTAL REG. No.GDP 45/ 2026-2028 Vol. 11 Thursday 08 October 2026 Issue No. 41

Act. Manager
Athar Ahmad Shamim
Mobile : +91-9815639670
 e-mail: managerbadaarqdn@gmail.com
 www.alislam.org/badar

ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 600/- (Per Issue : Rs. 12/-) (WEIGHT: 20-50 gms/issue)



सीरतुल-महदी

(लेखक: हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु)

{108} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। क़ाज़ी अमीर हुसैन साहब ने मुझसे बयान किया कि एक बार हमने हज़रत साहब से पूछा कि हज़ूर! हदीस में आता है कि सभी नबियों ने बकरियाँ चराई हैं। क्या हज़ूर ने भी कभी बकरियाँ चराई हैं? आपने फ़रमाया कि हाँ, मैं एक बार बाहर खेतों में गया था। वहाँ एक व्यक्ति बकरियाँ चरा रहा था। उसने कहा कि मैं ज़रा एक काम से जाता हूँ, आप मेरी बकरियों का ख़याल रखें। लेकिन वह इस तरह गया कि बस शाम को वापस आया और उसके आने तक हमें उसकी बकरियाँ चरानी पड़ीं।

{109} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। ख़ाक़सार अर्ज़ करता है कि हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल फ़रमाते थे कि जब फ़ल्ह-ए-इस्लाम और तौज़ीह-ए-मराम प्रकाशित हुई तो अभी मेरे पास नहीं पहुँची थीं और एक विरोधी व्यक्ति के पास पहुँच गई थीं। उसने अपने साथियों से कहा, देखो अब मैं मौलवी साहब को, यानी मुझे, मिर्ज़ा साहब से अलग किए देता हूँ।

चुनाँचे वह मेरे पास आया और कहने लगा कि मौलवी साहब! क्या नबी करीम के बाद कोई नबी हो सकता है? मैंने कहा, नहीं। उसने कहा, अगर कोई नुबुव्वत का दावा करे तो फिर? मैंने कहा, तो फिर हम यह देखेंगे कि क्या वह सच्चा और रास्तबाज़ है या नहीं। अगर सच्चा है तो हर हाल में उसकी बात को स्वीकार करेंगे।

मेरा यह जवाब सुनकर वह बोला, वाह मौलवी साहब! आप काबू में नहीं आए।

यह क्रिस्सा सुनाकर हज़रत मौलवी साहब फ़रमाया करते थे कि यह तो केवल नुबुव्वत की बात है। मेरा तो ईमान है कि अगर हज़रत मसीह मौऊद साहब शरीअत वाले नबी होने का दावा करें और कुरआनी शरीअत को रद्द करने वाली क़रार दें, तो फिर भी मुझे इनकार न हो, क्योंकि जब हमने आपको वास्तव में सच्चा और अल्लाह की ओर से पाया है तो अब आप जो भी फ़रमाएँगे वही हक़ होगा और हम समझ लेंगे कि आयत ख़ातमुन-नबिख़ीन के कोई और अर्थ होंगे।

ख़ाक़सार अर्ज़ करता है कि वास्तव में जब किसी व्यक्ति का अल्लाह तआला की ओर से होना निश्चित दलीलों के साथ साबित हो जाए तो फिर उसके किसी दावे में नुक्ताचीनी करना और सवाल उठाना अल्लाह तआला का मुक़ाबला करना ठहरता है।

(लेकिन वैसे हज़रत मौलवी साहब ने जो कुछ फ़रमाया, वह केवल एक सैद्दांतिक रंग की बात थी। वरना हमारा ईमान है और यही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शिक्षा है कि कुरआनी शरीअत आख़िरी शरीअत है। इसलिए हज़रत मौलवी साहब के ये शब्द उसी रंग में समझे जाएँगे, जिस रंग में अल्लाह तआला कुरआन शरीफ़ में फ़रमाता है कि:

“कहो, अगर रहमान की कोई संतान हो तो मैं सबसे पहले उसकी इबादत करने वालों में होऊँगा।” (अज़-ज़ुख़रुफ़: 82))

{110} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। मियाँ अब्दुल्लाह साहब सनौरी ने मुझसे बयान किया कि पुस-ए-मौऊद की भविष्यवाणी के बाद हज़रत साहब हमसे कभी-कभी कहा करते थे कि दुआ करो कि अल्लाह तआला हमें जल्द वह मौऊद लड़का अता करे।

उन दिनों हज़रत के घर उम्मीदवारी थी। एक दिन बारिश हुई तो मैं मस्जिद मुबारक के ऊपर सहन में जाकर बड़ी दुआ की, क्योंकि मैंने हज़रत साहब से सुना हुआ था कि अगर बारिश में दुआ की जाए तो अधिक क़बूल होती है।

फिर मुझे दुआ करते-करते ख़याल आया कि बाहर जंगल में जाकर दुआ करूँ, क्योंकि मैंने हज़रत साहब से यह भी सुना हुआ था कि बाहर जंगल की दुआ भी अधिक क़बूल होती है और मैंने ग़नीमत समझा कि ये दो क़बूलियत के मौक़े मेरे लिए उपलब्ध हैं।

चुनाँचे मैं क़ादियान से पूर्व की ओर चला गया और बाहर जंगल में बारिश के

अंदर बहुत देर तक सजदे में दुआ करता रहा। गोया उस दिन लगभग सारा दिन मेरा बारिश में ही कटा।

उसी दिन शाम या दूसरे दिन सुबह हज़रत साहब ने मुझसे फ़रमाया कि मुझे इल्हाम हुआ है कि—

“इनको कह दो, उन्होंने बहुत दुख उठाया है, बहुत सवाब होगा।”

मैंने अर्ज़ किया, हज़ूर! यह इल्हाम तो मेरे बारे में मालूम होता है। हज़ूर ने फ़रमाया, किस तरह?

मैंने अपनी दुआ का सारा क्रिस्सा सुना दिया। हज़ूर खुश हुए और फ़रमाया, ऐसा ही मालूम होता है।

फिर मैंने इस खुशी में एक आने के पताशे बाँटे। मगर उस समय मैं इसके असल अर्थ नहीं समझा। फिर जब इस्मत पैदा हुई तो मैं समझा कि वास्तव में इस इल्हाम में यह बताया गया था कि यद्यपि दुआ क़बूल नहीं होगी, लेकिन मुझे सवाब पहुँच जाएगा।

{111} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। मियाँ अब्दुल्लाह साहिब सनौरी ने मुझसे बयान किया कि जब अभी हज़रत ने बैअत का सिलसिला शुरू नहीं किया था, मैंने एक बार हज़रत से निवेदन किया कि हज़ूर मेरी बैअत ले लें। आपने फरमाया, पीर का काम भंगी जैसा काम है। उसे अपने हाथ से मुरीद की गंदगी निकालकर धोनी पड़ती है और मुझे इस काम से घृणा आती है। मैंने निवेदन किया, हज़ूर, तो फिर कोई संबंध तो होना चाहिए। मैं आता हूँ और ऊपर-ऊपर से चला जाता हूँ। हज़ूर ने फरमाया, अच्छा, तुम हमारे शागिर्द बन जाओ और हमसे कुरआन शरीफ का अनुवाद पढ़ लिया करो।

फिर ईद के दिन हज़ूर ने फरमाया, जाओ एक आने के पताशे ले आओ, ताकि बाकायदा शागिर्द बन जाओ। मैंने पताशे लाकर सामने रख दिए, जिन्हें हज़ूर ने बाँट दिया और कुछ मुझे भी दे दिए। फिर हज़ूर मुझे एक सप्ताह के बाद एक आयत के सरल अर्थ पढ़ा दिया करते थे और कभी किसी आयत की थोड़ी-सी तफ़्सीर भी फरमा देते थे।

एक दिन फरमाया, मियाँ अब्दुल्लाह! मैं तुम्हें कुरआन शरीफ के हक़ीक़त और मआरिफ इसलिए नहीं बताता कि मैं तुममें उन्हें सहन करने की शक्ति नहीं देखता। मियाँ अब्दुल्लाह साहिब कहते थे कि इसका मतलब मैं यह समझा हूँ कि अगर मुझे उस समय वे बातें बताई जातीं तो मैं पागल हो जाता। मगर इस सरल अनुवाद का ही, जो मैंने आपसे लगभग आधा पारा पढ़ा होगा, अब तक अपने अंदर कुरआन समझने के संबंध में एक विशेष प्रभाव देखता हूँ।

इसके अलावा मियाँ अब्दुल्लाह साहिब बयान करते थे कि मैंने एक बार हज़रत साहिब से निवेदन किया कि हज़ूर! जब मैं क़ादियान आता हूँ तो और तो कोई खास बात महसूस नहीं होती, मगर मैं यह देखता हूँ कि यहाँ समय-समय पर अचानक मुझ पर कुरआन शरीफ की कुछ आयतों के अर्थ खोल दिए जाते हैं और मैं इस तरह महसूस करता हूँ कि मानो मेरे दिल पर अर्थों की एक पोतली बाँधकर डाल दी जाती है। हज़रत साहिब ने फरमाया कि हमें कुरआन शरीफ के मआरिफ देकर ही भेजा गया है और इसी की सेवा हमारा कर्तव्य निर्धारित की गई है। इसलिए हमारी संगति का भी यही लाभ होना चाहिए।

ख़ाक़सार निवेदन करता है कि मुझसे हाजी अब्दुल मजीद साहिब लुधियानवी ने भी बयान किया कि हमारे पहले पीर मुंशी अहमद जान साहिब मरहूम ने भी हज़रत साहिब से बैअत की प्रार्थना की थी, मगर हज़ूर ने फरमाया:

لَسْتُ بِمَأْمُورٍ अर्थात्, मुझे इसका आदेश नहीं दिया गया।

ख़ाक़सार निवेदन करता है कि हज़रत ख़लीफ़ा प्रथम ने भी जब हज़ूर से बैअत की प्रार्थना की थी तो हज़ूर ने यही उत्तर दिया था कि मुझे इसका आदेश नहीं मिला। फिर बाद में जब आदेश हुआ तो हज़ूर ने बैअत का सिलसिला शुरू फरमाया।